तृतीय अध्याय

पूर्व माध्यमिक हिंदी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन भाषिक उद्देश्यों के आधार पर।

तृतीय अध्याय

पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन माषिक उद्देश्यों के आधार पर ।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में सामान्य जानकारी प्राप्त करने के पश्चात अब हमें संशोधन विषय ` हिन्दी माषा की दृष्टि से पूर्व माध्यमिक हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन पर विस्तार से विचार करेंगे । संशोधन विषय की व्याप्ति एवं मर्यादा के अनुसार प्रस्तुत अध्याय में हमें हिन्दी माषा की दृष्टि से पाँचवीं, छठी एवं सातवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन करना है । अत: पाठ्यपुस्तकों का इस दृष्टि से अनुशीलन करने के पूर्व हमें माषिक उद्देश्यों की जानकारी होना आवश्यक है ।

माषिक उददेश्य -

(अ) श्रवण-आकलन - सामान्यत: कानों के माध्यमसे कोई भी ध्वनि-ग्रहण करने की क्रिया को सुनना कहा जाता है । कानों से कुछ भी सुनने और उसे समझाने की चेष्टा को हम श्रवण कह सकते हैं । शिक्षण के संदर्भ में श्रवण कौशल के अंतर्गत तीन प्रकार की शक्तियों का समावेश किया जाता है , अंतरबोध शक्ति, धारण शक्ति, बोधन शक्ति । अत: यह कहा जा सकता है कि किसी वक्ता के उच्चारण - माषण का श्रोता पर सक्रीय प्रभाव पड़ता है । अत: श्रवण एक सक्रिय तथा सोद्देश्य क्रिया है ।

० अंतर बोध शक्ति का अर्थ है - माषा (मातृ माषा तथा द्वितीय माषा) की दो एकाकी ध्वनियों तथा दो ध्वनि संयोजनों को सुनकर उन के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से समझाना ।

० धारण शक्ति का अर्थ है - जिन ध्वनि-युग्मों के बीच का अंतर हम समझ चुके हैं, उस अंतर को अपनी अवचेतन में स्थिर रखना । ध्वनि-युग्मों (आघात,

सुर, ध्वनि गुणयुक्त) का जितना अंतर स्पष्ट होगा, धारण शक्ति उतनी ही अधिक चढेगी ।

० बोधन शक्ति का अर्थ-ध्वनि योग से निर्मित शब्दों के अर्थ को ग्रहण करते हुए समझाना॰ उदा: - क उ ल अ - कुल, क ऊ ल अ - कूल ।

(ब) भाषण -

भाषण कौशल का अर्थ है - बोलना, भाषण या मौखिक अभिव्यक्ति । शिक्षण की दृष्टि से भाषण कौशल के मुख्य दो पक्ष हैं ।

(१) एकल, संयुक्त ध्वनियाँ तथा ध्वनि संयोजन का उच्चारण ।

(२) वाक्यांश या वाक्यों में भावों-विचारों की अभिव्यक्ति ।

हिन्दी भाषा के परिनिष्ठित रूप में प्रवाहपूर्ण, प्रभावपूर्ण शैली में अपने भावों-विचारों को अभिव्यक्त कर सकना, हिन्दी भाषा-अध्ययन का मुख्य लक्ष्य होने के कारण भाषण कौशल शिक्षण का हिन्दी भाषा-शिक्षण में विशेष महत्त्व है । भाषण-कौशल पर अच्छा अधिकार करा देने से लेखन कौशल पर अधिकार कराने में पर्याप्त सरलता रहती है ।

(१) उच्चारण पक्ष - मातृभाषा की ध्वनि-व्यवस्था का प्रभाव हिन्दी भाषा की ध्वनि-व्यवस्था को समझाने तथा उसको उच्चारण-प्रक्रिया पर भी पडता है । हिन्दी भाषा की ध्वनि-व्यवस्था पर मातृभाषा की ध्वनि-व्यवस्था के अन्तरण के कारण अध्येता हिन्दी भाषा की ध्वनियों, अनुतान को मातृभाषा की ध्वनियों, अनुतान के रूप में सुनता तथा बोलता है ।

(२) अभिव्यक्ति पक्ष - भाषा के अध्येता का उच्चारण पक्ष पर अच्छा अधिकार हो जाने के साथ-साथ अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी भाषा के वाक्य-साँचों तथा शब्दावली पर ज्यों-ज्यों अधिकार बढता जाता है, त्यों-त्यों अभिव्यक्ति में परिपक्वता आती जाती है । सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए वाक्य-साँचों के अभ्यासों तथा मौखिक वार्तालाप-अभ्यासों का उपयोग किया जाना लाभकारी है ।

ज्ञानात्मक तथा सुधारात्मक उच्चारण -

किसी भाषा का उच्चारण सीखने का उद्देश्य है,उस भाषा की ध्वनि-व्यवस्था पर अधिकार करना अर्थात अध्येय भाषा के मातृभाषी द्वारा उच्चारित परिनिष्ठित भाषा की मेदक ध्वनियों को पहचानते हुए उनका उसी प्रकार उच्चारण करना ।"२

(क) वाचन - वाचन शब्द का अर्थ है,' भाषा को उसके लिखित रूप के आधार पर ग्रहण करना ।' लिपि-संकेतों या वर्णों का उनसे संबंध ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया को वाचन कहा जाता है, किन्तु वाचन के मूल में अर्थ-ग्रहण की आवश्यकता भी छिपि रहती है । भाषा अध्यापन-अध्ययन की दृष्टि से वाचन का क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है । लिखित वर्णों का ध्वनियों से सह-संबंध स्थापित करते हुए ग्रहण कर सकने की क्षमता का विकास वाचन कौशल-शिक्षण का उद्देश्य है ।

वाचन के प्रकार -- (१) सस्वर वाचन (२) मौन वाचन --

लिखित भाषा का ध्वन्यात्मक पाठ, वाचन,सास्वर पाठ ही सस्वर वाचन या मुखर वाचन कहा जाता है । सस्वर वाचन के समय वाचक को स्वयं या दूसरों के कानों द्वारा ग्रहण करने के लिए ध्वनियों का उच्चारण करना आवश्यक होता है । मौन वाचन के समय पाठक-वाचक ओठ न चलाते हुए स्वयं लिखित सामग्री के बोध के लिए लिपि संकेतों को बिना ध्वनि के ध्वन्यात्मक मूल्य के साथ पढता है । इस के अलावा द्रुत वाचन और गहन वाचन भी महत्त्वपूर्ण है ।" ४

(ड) लेखन - भाषा के द्वारा भावों-विचारों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से होती है - मौखिक (ध्वनि), लिखित (वर्ण) रूप में । ध्वनियों का लिपि-संकेतों का रूपांतरण ही लेखन कहलाता है । लेखन भाषा को दृश्य चिह्नों में अंकित करने की प्रणाली है ।

लेखन कौशल के विकास की प्रक्रिया के आधार पर इसके तीन प्रकार माने जाते है । वर्ण लेखन,वर्तनी ज्ञान, (शब्दों में वर्ण संयोग-लेखन),आत्माभिव्यक्ति

लेखन । इस आधार पर लेखन कौशल-शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य कहे जा सकते हैं ।[४]

१ अध्येय भाषा के लिए प्रयुक्त लिपि को सुडौल, स्पष्ट और आकर्षक लिखावट में अंकित करना ।

२ अध्येय भाषा में प्रचलित चलन के अनुरूप शब्दों को वर्तनी जानना और लिखना ।

३ लिखते समय यथास्थान विरामादि चिह्नों का प्रयोग करना ।

४ अध्येय भाषा में स्व-विचारों, अनुभवों को प्रभावशाली ढंग शैली में अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना ।

५ रचना या आत्माभिव्यक्ति के लिए शब्दों, वाक्यांशों वाक्य सांचों का चयन करते हुए उन्हें लिखित रूप में सुव्यवस्थित तथा सुसंगठित करना ।

द्वितीय भाषा के संदर्भ में लेखन-कौशल विकास, दक्षता के लिए यह आवश्यक है, कि अध्येय भाषा का पर्याप्त मात्रा में श्रवण और वाचन किया जाय । जिस बात को छात्र मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने में दक्ष नहीं होता, उसे लिखित रूप से व्यक्त करने के लिए भाषा पर सक्रिय अधिकार होना परमावश्यक है ।

भाषिक उद्देश्यों की इस सामान्य जानकारी के आधार पर अब हम क्रमशः कक्षा पाँचवीं की छठी और सातवीं की पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन करेंगे । अनुशीलन की प्रक्रिया में निम्नांकित ढाँचे का आधार लिया जाएगा और उससे संबंधित जानकारी खोजने का प्रयास किया जाएगा ।

भाषिक उद्देश्य - के अंतर्गत श्रवण-आकलन एवं भाषण-संभाषण महत्त्वपूर्ण है । श्रवण-आकलन में छात्र शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा का श्रवण करते हुए अनुकरण के माध्यम से उसका आकलन करते हैं । अतः शिक्षक के लिए यह आवश्यक बन जाता है कि वह पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त सभी शब्दों एवं संबोधों का मानक हिन्दी में उच्चारण करे ताकि छात्र भाषा का मानक एवं सही रूप में श्रवण एवं आकलन कर सके । साथ ही छात्रों द्वारा उन शब्दों का मानक उच्चारण करवा लें ।

उसी प्रकार भाषण-संभाषण के अंतर्गत शिक्षक का यह दायित्व होता है कि वह पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त शब्दों को सही एवं मानक रूप में फलक पर खुद लिखें और अभ्यास के लिए छात्रों द्वारा लिखना लें। अत: पाठ्यपुस्तक का अनुशीलन करते समय हर पाठ में श्रवण-आकलन एवं भाषण-संभाषण से संबंधित प्रयुक्त शब्दों और संबोधों को छाटकर अलग दर्शाया गया है। वाचन एवं लेखन से संबंधित नयी जानकारी एवं विशेषता को भी हर पाठ के अनुशीलन के साथ अंकित करने का प्रयास किया है।

(अ) कक्षा पाँचवीं - श्रवण-आकलन, भाषण - संभाषण, वाचन, लेखन ।

कक्षा पाँचवीं

पाठ क्रमांक - १ (गद्य) । शीर्षक - वर्णमाला ।
युग - आधुनिक युग । विधा - लिपि ।
संरचना में स्थान - व्याकरण की जानकारी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - हिन्दी की मानक वर्णमाला को चित्रों के माध्यम से समझाना ।
पाठ का उद्देश्य - हिन्दी की मानक वर्णमाला की जानकारी छात्रों को देना ।
छात्रों की अक्षरों के अवयव समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - छात्रों पर पाँचवीं कक्षा तक मातृभाषा का प्रभाव रहता है और वे मातृभाषा की वर्णमाला के अनुसार हिन्दी के वर्ण लिखते हैं । हिन्दी के कुछ वर्ण आवश्यकता नुसार अलग रूप से लिखे जाते हैं । उदा. हिन्दी में नुक्ता का प्रयोग आवश्यकतानुसार होता है, पर मराठी में नहीं होता ।

कारक -)
विराम चिह्न -) प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।
एवं काल विचार)

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में कुछ वर्ण आए हैं, जिनका मातृभाषा में अलग रूप से उच्चारण होता है और हिन्दी में अलग रूप से उच्चारण होता है । उदा. ड़ , ढ़ , ज्ञ, क्ष ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र हिन्दी के कुछ वर्ण अलग रूप से लिखते हैं। उदा.ड़ - ड , ढ़ - ढ।

नये संबोध, नये शब्द , मुहावरे, एवं कहावते -- प्रस्तुत पाठ में नहीं है।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण-आकलन - छात्र पाँचवीं कक्षा से हिन्दी भाषा का अध्ययन करता है। उसे मातृभाषा की वर्णमाला की जानकारी है। वर्णों के उच्चारण की जानकारी है, मगर हिन्दी की वर्णमाला के उच्चारण की जानकारी नहीं होती। इस लिए अध्यापकों ने वर्णमाला का मानक उच्चारण करना चाहिए। अध्यापक वर्णमाला का मानक उच्चारण करते हैं, तो छात्र भी उसे सही ढंग से सुनते है एवं अनुकरण करते हैं। साथ ही छात्रों को पूरे साल में एक से सौ तक अंकों की गिनती समझाना।

भाषण - संभाषण - छात्र वर्णों का मानक उच्चारण सुनते हैं, तब वे बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं। उदा. प्रस्तुत पाठ में ड़ - ढ़ - ज - न - ण - ज्ञ - क्ष आदि।

वाचन - छात्र जिस तरह सुनते हैं, उसी प्रकार बोलने का प्रयास करते हैं। अध्यापकों ने छात्रों द्वारा वर्णमाला का सस्वर वाचन लिया जा सकता है।

लेखन - लेखन की दृष्टि से कुछ वर्णों को छात्र शीघ्रता के कारण गलत रूप से लिखते हैं। ऐसी दशा में छात्रों को यह समझाना कि उन्हें सही रूप से कैसे लिखना चाहिए।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को मानक रूप में वर्ण लिखने की जानकारी प्राप्त होती है।

पाठ क्रमांक - २ (गद्य) । शीर्षक - वर्णलेखन विधि ।
युग - आधुनिक युग । विधा - लिपि ।
संरचना में स्थान - वर्णमाला लेखन ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - छात्र समझाते हैं कि हिन्दी के मानक वर्णमाला को कैसे लिखा जाए ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को हिन्दी के मानक वर्णमाला लेखन की विधि को समझाना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - छात्रों पर मातृभाषा का प्रभाव होने के कारण वे कुछ वर्णों को मराठी ढंग से लिखते हैं । उदा. ह - ह, ढ - ढ, छात्र ' ए ' को ' ऐ ' के रूप में लिखते हैं ।

वाक्य प्रकार , कारक , विराम चिह्न, एवं काल विचार । प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - हिन्दी के कुछ वर्णों का उच्चारण मातृभाषा (मराठी) के वर्णों की तरह नहीं होता । छात्रों को समझाना कि हिन्दी में उनका अलग रूप से उच्चारण होता है ।

लिखित वर्तनी - छात्रों को समझाना कि हिन्दी के वर्णों का जिस रूप में मानक उच्चारण होता है वैसे ही उसे नहीं लिखना चाहिए । उदा.ज - ग्य,ए-ऐ,।

नये संबोध , नये शब्द , मुहावरे एवं कहावतें । प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - हिन्दी के कुछ वर्णों का उच्चारण अलग रूप से किया जाता है,उन उच्चारणों के अंतर को छात्रों को समझाना ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने हिन्दी के वर्णों का मानक उच्चारण करना चाहिए ताकि छात्र भी मानक उच्चारण को सुनेंगे । अध्यापकों ने छात्रों को कुछ शब्द पढने के लिए कहना चाहिए । उदा. सड़क,गढ़,अध्याय,छल,औरत,औरत,यज्ञ, ऐनक । साथ ही हिन्दी संयुक्त वर्णों का समझाना ।

वाचन - छात्र हिन्दी की मानक वर्णमाला को सरलता से समझे इस लिए अध्यापकों ने हिन्दी वर्णमाला का सस्वर वाचन करना चाहिए। छात्रों को वर्णमाला का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए।

लेखन - छात्रों को यह समझाना चाहिए कि प्रस्तुत पाठ में जो हिन्दी के वर्ण है उन्हे सही रूप में कैसे लिखा जाए। छात्रों को मातृभाषा और हिन्दी के वर्णों में होने वाले अंतर को समझाना चाहिए। अध्यापकों ने छात्रों को कुछ नये शब्द लिखने के लिए कहना चाहिए। उदा. ज्ञान, अंदर, पढ़, ऋण, ऐनक।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र हिन्दी के वर्णों की लेखन विधि को समझाते है और मानक वर्ण लेखन के कारण, छात्र शब्द सही रूप से लिखते हैं। छात्र शुद्ध लेखन की गलतियाँ नही करते हैं।

पाठ क्रमांक - ३ (गद्य) शीर्षक - यह - ये, वह - वे।
युग - आधुनिक युग । विधा - गद्य।
संरचना में स्थान - व्याकरण के अंतर्गत सर्वनाम की जानकारी।
पाठ का संक्षिप्त आशय - छात्रों को सर्वनाम और उनके प्रयोग की जानकारी देना।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को सर्वनाम और उनके प्रयोगों को समझाना।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - प्रस्तुत पाठ में ` ढ़ ` वर्ण का प्रयोग हुआ है।
वाक्य प्रकार - प्रस्तुत पाठ में सरल एवं संक्षिप्त वाक्य का प्रयोग हुआ है।
कारक प्रत्ययों का प्रयोग नहीं है।
विराम चिह्न - प्रस्तुत पाठ में पूर्ण विराम का प्रयोग हुआ है।
काल विचार - प्रस्तुत पाठ में सामान्य वर्तमान काल का प्रयोग हुआ है।

०वर्तनी—मौखिक वर्तनी - नुक्ता वाले वर्णों का सही उच्चारण छात्रों को समझाना ।
लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र हिन्दी के कुछ वर्ण गलत रूप से लिखते हैं । उदा.` ड `,` ढ ` । सही रूप लिखवाना ।
नये शब्द - प्रस्तुत पाठ में गमला यह नया शब्द आया है ।
नये संबोध, मुहावरे, एवं कहावते - । प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।
० भाषिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - छात्रों को मातृभाषा के व्याकरण की सामान्य जानकारी होती है । छात्रों को हिन्दी के सर्वनाम और संज्ञा की सामान्य जानकारी देना । प्रस्तुत पाठ में आए शब्दों का मानक उच्चारण समझाना । छात्रों को समझाना कि वाक्य में जब बहुवचन आता है,तब ` है ` पर अनुस्वार आता है ।
भाषण- संभाषण - अध्यापक जो बोलते हैं,उसे छात्र सुनते हैं । इस लिए अध्यापकों ने शब्दों का मानक उच्चारण कर के बोलना चाहिए । उदा.हिन्दी में ` यहं ` लिखा जाता है लेकिन उसका उच्चारण ` ये ` होता है ।
वाचन - छात्रों को जिन वर्णों के नीचे नुक्ता आया है,ऐसे शब्दों का सही वाचन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए । उदा.लड़का,सड़क,बड़ी ।
लेखन - हिन्दी के कुछ वर्ण अलग रूप से लिखे जाते हैं,जिन वर्णों के नीचे नुक्ता आता है ,ऐसे शब्द छात्रों से लिखवाने चाहिए ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को सर्वनामों की सामान्य जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक ४ - गद्य । शीर्षक - घर - परिवार ।
युग - आधुनिक युग । विधा - निबंध ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक गद्य पाठ ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - अतुल की बड़ी बहन रमा,अपनी सहेली मीना को अपने घर,माताजी,पिताजी और बड़े भाई के बारे में जानकारी देती है।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को परिवार के बारे में जानकारी देना साथ ही संज्ञा और सर्वनामों के बारे में जानकारी देना। वचनों के बारे में जानकारी देना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - प्रस्तुत पाठ में रसोई घर संधियुक्त शब्द का प्रयोग हुआ है।

वाक्य प्रकार - प्रस्तुत पाठ में सरल एवं संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

कारक - प्रस्तुत पाठ में संबंध कारक का प्रयोग हुआ है।

विराम चिह्न - प्रस्तुत पाठ में अल्प विराम,पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक,इन विराम चिह्नों का प्रयोग हुआ है।

काल विचार - प्रस्तुत पाठ में सामान्य वर्तमान काल का प्रयोग हुआ है।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का गलत रूप से उच्चारण करते हैं,उदा.मैं,रहना,हैं। इनका सही उच्चारण करवाना।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में गलतियाँ करते हैं। उदा.मैं,बड़ी।

नये शब्द - प्रस्तुत पाठ में रसोईघर,बड़ी,परिवार,ये नये शब्द आए हैं।

मुहावरे, कहावतें एवं नये संबोध प्रस्तुत पाठ में नहीं हैं।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - प्रस्तुत पाठ में उच्चारण की दृष्टि से कुछ नये शब्द आए हैं जिनका उच्चारण मानक रूप से करना चाहिए। उदा.मैं, रहना,बड़ी।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण अध्यापकों ने छात्रों को समझाना चाहिए। अध्यापकों ने संभाषण करते समय शब्दों की -ह्रस्व एवं दीर्घ मात्रा पर ध्यान देना चाहिए। उदा.मीना,पिताजी, परिवार आदि।

वाचन - प्रस्तुत पाठ का अध्यापकों ने सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय विराम चिह्नों और संयुक्त शब्दों की ओर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्र पाठ का आशय समझे इस लिए मौन वाचन करने के लिए भी कहना चाहिए । छात्रों को हिन्दी भाषा की ओर आकृष्ट करने के लिए अन्य परिवार के बारे में जानकारी लेने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - लेखन की दृष्टि से तथा शब्द भंडार बढाने की दृष्टि से पाठ में कुछ नये शब्द आए हैं । उन्हें ठीक तरह से अध्यापकों ने छात्रों से लिखवाना चाहिए । उदा.मैं,रसोईघर,बही । छात्रों को अपने परिवार के बारे में पाँच पंक्तियाँ लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र परिवार के बारे में जानकारी लेते हैं । साथही संज्ञा और सर्वनाम की जानकारी होती है । छात्र वचन के बारे में जानकारी लेते हैं ।

पाठ क्रमांक - ५ (गद्य) शीर्षक - बगीचा ।
युग - आधुनिक युग । विधा - संवादात्मक पाठ ।
संरचना में स्थान -

पाठ का संक्षिप्त आशय - गुरूजी,वंदना और अशोक बगीचा में गए हैं । वंदना और अशोक को वृक्ष पर आए बेर के बारे में गुरूजी जानकारी देते हैं । वंदना और अशोक,गुरूजी को काली कोयल,बंदर,जूही के फूल,कमल के फूल के बारे में बताते हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को बगीचा और आज्ञार्थक क्रिया के बारे में जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - प्रस्तुत पाठ में दृविरुक्ति वाले शब्द आए हैं। उदा.पीले - पीले।

वाक्य प्रकार - आज्ञार्थक वाक्य,सरल व संक्षिप्त वाक्य।

कारक - संबंध कारक,अधिकरण कारक,संबोधन कारक।

विराम चिह्न - अल्प विराम,पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक।

काल विचार - सामान्य वर्तमानकाल,सामान्य भूतकाल।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में जो नये शब्द आए हैं उनका उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं। उदा.तलैया,अत:।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में मराठी के प्रभाव के कारण या शीघ्रता के कारण गलतियाँ करते हैं। उदा.बडी,अत: ,वृक्ष।

नये संबोध - प्रस्तुत पाठ में फूल,वृक्ष,रंग ये नये संबोध आए हैं।

नये शब्द - कोयल, बेल,बैर,जूही,तलैया,अत:।

मुहावरे - एवं कहावतें नहीं हैं।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - प्रस्तुत पाठमें आए नये शब्दों का अध्यापकों ने मानक उच्चारण करना चाहिए। उदा.बैर,तलैया,अत: ,तेज, वृक्ष आदि।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण अध्यापकों ने छात्रों को समझाना चाहिए। अध्यापकों ने भाषण-संभाषण भाव के अनुसार करना चाहिए। उदा.वृक्ष,अत:,तेज आदि।

वाचन - प्रस्तुत पाठ का अध्यापकों ने सस्वर वाचन करना चाहिए। वाचन करते समय विरामचिह्न और आरोह - अवरोह पर ध्यान देना चाहिए। छात्रों द्वारा प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन लेना चाहिए। पाठ का आशय समझाने के लिए छात्रों को मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए।

लेखन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय शीघ्रता के कारण गलती करते हैं। उदा.बैार,पैाधे,बडी । अध्यापकों ने प्रस्तुत शब्दों को सही रूप में लिखवाना चाहिए। पाठ में आयी आज्ञार्थक क्रियाओं को चुनकर लिखने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को बगीचा तथा आज्ञार्थक क्रियाओं की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक - ६ (पद्य)। शीर्षक - तीतली ।
युग - आधुनिक युग। विधा - काव्य।
संरचना में स्थान - प्रकृतिवर्णनपर कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - पीली,भूरी,काली-काली तितली फूल फूल पर और डाली-डाली पर उडती है। वह किसी के हाथ नहीं आती ।
कविता का उद्देश्य - छात्रों में प्रकृति प्रेम जागृत करना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरूक्ति वाले शब्द - काली-काली, फूल-फूल,डाली-डाली ।
वाक्य प्रकार - एवं कारकों का प्रयोग प्रस्तुत पद्य में नहीं है।
विराम चिह्न - अल्पविराम,पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक ।
काल विचार - सामान्य वर्तमान काल।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का छात्र गलत रूप से उच्चारण करते हैं। उदा.भूरी,डाली,उडती ।
लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में गलतियाँ करते हैं। उदा. उड,नहीं,उडती ।
नये संबोध - मतवाली,सुंदर ।
नये शब्द - तितली,भूरी,उडना ।

मुहावरे - एवं कहावतें - नहीं है ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - छात्रों को समझाना कि हिन्दी के कुछ वर्ण और मराठी के कुछ वर्ण के उच्चारण में अंतर है । प्रस्तुत कविता में आया शब्द - ` उड ` के उच्चारण को समझाना । ताकि छात्रों को उसका सही आकलन हो ।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों को समझाना चाहिए । उदा.उडना ।

वाचन - प्रस्तुत कविता का अध्यापकों ने भावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए । छात्रों को कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को कविता का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । कविता वाचन करते समय आरोह - अवरोह पर ध्यान देना चाहिए ।

लेखन - अध्यापकों ने यह समझाना चाहिए कि प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को शुद्ध रूप से कैसे लिखा जाय । उदा.रंगों,वाली,पंखों वाली ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में प्रकृति प्रेम जागृत होता है और शब्दों का मानक उच्चारण समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - ७ (गद्य) । शीर्षक - मुन्नी ।

युग - आधुनिक युग । विधा - वर्णनात्मक गद्य पाठ ।

संरचना में स्थान -

पाठ का संक्षिप्त आशय - मुन्नी सबेरे उठ कर स्नान करती है,स्वच्छ कपडे पहन कर नाश्ता करती है और पाठशालाजाती है । पाठशाला में शिब्बू और उसके दोस्त पढते हैं । मुन्नी की पाठशाला बहुत अच्छी है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को स्वच्छता और सामान्य वर्तमान काल की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - कुछ वर्णों का संयोग हुआ है,मुन्नी, डिब्बा -शिब्बू ।

वाक्य प्रकार - सरल व संक्षिप्त वाक्य ।

कारक - कर्म कारक,संबंध कारक,अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं । उदा.पहनना,बहुत,पढना ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.मुन्नी,दिब्बा,पढना,बहुत ।

नये संबोध - दीवार,तस्वीर ।

नये शब्द - नाश्ता,बिल्ली,बहुत,पाठशाला ।

मुहावरे - एवं कहावतें - नहीं है ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों को समझाना चाहिए । उदा.स्नान,पहनना,डिब्बा,बहुत ।

भाषण संभाषण - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में अंकित चिह्नों पर गौर कर के उसके अनुसार उच्चारण करना चाहिए । अध्यापक का भाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए । छात्रों को नये शब्दों का मानक उच्चारण समझाना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व मात्रा व दीर्घ मात्रा पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - प्रस्तुत पाठ में कुछ शब्दों में वर्ण संयोग हुआ है। उदा.मुन्नी,बिल्ली, डिब्बा,शिब्बू, ये शब्द सही ढंग से कैसे लिखे जाय यह छात्रों को समझाना चाहिए।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को स्वच्छता और सामान्य वर्तमान काल की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक - ८ (गद्य)। शीर्षक - छुट्टी का दिन।
युग - आधुनिक विधा - वर्णनात्मक पाठ।
संरचना में स्थान -
पाठ का संक्षिप्त आशय - छुट्टी के दिन मैदान पर लड़के कबड्डी और लड़कियाँ खो-खो खेल रहे हैं। कुछ लड़के कहानियाँ और पाठय-पुस्तकें पढ रहे हैं। कुछ लड़के खेल देख रहे हैं।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को अपूर्ण वर्तमान काल के बारे में जानकारी देना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - प्रस्तुत पाठ में वर्ण संयोग वाले शब्द प्रयुक्त हुए है। उदा.कबड्डी,छुट्टी,बच्चे।
वाक्य प्रकार - सरल एवं संक्षिप्त वाक्य।
कारक - संबोधन कारक,अधिकरण कारक,करण कारक।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक।
काल विचार - अपूर्ण वर्तमान काल।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का छात्र गलत उच्चारण करते है। उदा.लड़का,पढना।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा.लड्का,पढना।

नये संबोध - खेल,कहानी।

नये शब्द - बातें,पाठयपुस्तक,दिन,बिताना।

मुहावरे - प्रस्तुत पाठ में `दिन आनंद से बिताना` मुहावरा आया है।

कहावतें - नहीं है।

० मार्गिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का अध्यापकों ने मानक उच्चारण करना चाहिए। तभी छात्र सही आकलन करेंगे। उदा.लड्का,रहना।

भाषण - संभाषण - उदा.लड्का,रहना। जब शब्द का दूसरा वर्ण `ह` होता है और पहला वर्ण अकारांत होता है तब पहले वर्ण का उच्चारण एकारांत होता है। यह व्याकरण का नियम अध्यापकों ने छात्रों को समझाना चाहिए।

वाचन - प्रस्तुत पाठ का अध्यापन करते समय अध्यापकों ने पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए। वाचन करते समय पाठ में आये विराम चिह्न और शब्दों की ह्रस्व व दीर्घ मात्रा पर ध्यान देना चाहिए। छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन तथा पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए भी कहना चाहिए

लेखन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय शीघ्रता के कारण छात्र गलतियाँ करते हैं। अध्यापकों ने उन गलतियों को सुधारना चाहिए। उदा.दिन,लड्कियाँ, पढना। छात्रों को पाठ में आयी अपूर्ण वर्तमान काल की क्रियाओं को छाँटकर लिखने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र अपूर्ण वर्तमान काल की क्रियाओं के बारे में जानकारी लेते हैं।

पाठ क्रमांक - ९ (पद्य) । शीर्षक - नन्हीं चिड़िया ।

युग - आधुनिक कला । विधा - काव्य ।

संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - नन्हीं चिड़िया आलस छोड़कर प्रात: हमें जगाने आयी है । वह टोली लेकर आकाश में उड़ती है और हमे मेल का महत्त्व बताती है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को यह जानकारी देना कि एकता से प्रगति संभव है तथा शब्दों के -ह्रस्व मात्रा के उच्चारण कैसे होते हैं ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्ति वाले शब्द - फुदक - फुदककर हुलस - हुलसकर ।

वाक्य प्रकार , कारक - ॥ प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।

विराम चिह्न - अल्प विराम,प्रश्न चिह्न,पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमानकाल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का छात्र गलत उच्चारण करते हैं । उदा .तजकर,प्रात: चिड़िया,उड़कर ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.नन्हीं,चिड़िया,प्रात:, उड़कर ।

नये संबोध - उमंग ।

नये शब्द - चिड़िया ,मेल,आलस,तजना,फुदकना,हुलसना ।

मुहावरे , कहावते ॥ प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा.तजकर,प्रात: चिड़िया,उड़कर ।

<u>भाषण संभाषण</u> - उदा.प्रात: जगाना,तजकर,चिड़िया ।

<u>वाचन</u> - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का सस्वर एवं भावपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -हस्व मात्रा व दीर्घ मात्रा साथ ही आरोह-अवरोह पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । कविता का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

<u>लेखन</u> - छात्र लिखते समय मराठी के प्रभाव के कारण या शीघ्रता के कारण गलतियाँ करते हैं । अध्यापकों ने उन गलतियों में सुधार करना चाहिए । उदा. आलस,चिड़िया,प्रात: । छात्रों को कविता के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहा जा सकता है ।

o <u>पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान</u> - छात्र एकता का महत्त्व समझाते है और शब्दों की -हस्व मात्रा का उच्चारण समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १० (गद्य) । शीर्षक - रमण की फुलवारी ।

युग - आधुनिक युग । विधा - वर्णनात्मक गद्य पाठ ।

संरचना में स्थान - उपदेशात्मक पाठ ।

<u>पाठ का संक्षिप्त आशय</u> - रमण माली से गुलाब,मोगरा,रातरानी ,चमेली, आदि फूलों - पौधों को अपनी फुलवाड़ीमें लगाता है । यह देख कर रूक्मा भी अपने घर के सामने पौधें लगाना चाहती हैं ।

<u>पाठ का उद्देश्य</u> - छात्रों को प्रकृति के प्रति आकृष्ट करना तथा अपनी फुलवाटी बनाने की प्रेरणा देना । साथ ही छात्रों को एकवचन एवं बहुवचन के बारे में जानकारी देना ।

o <u>व्याकरण</u> - <u>वर्ण विचार की दृष्टि से</u> - द्विरुक्तिवाला शब्द - कभी-कभी ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, सरल एवं संक्षिप्त वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक, संप्रदान कारक, संबंध कारक ।

विराम चिह्न - प्रश्न चिह्न, अल्पविराम, पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में प्रयुक्त नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं । उदा. चमेली, चाहना ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषामें भी गलतियाँ करते हैं । उदा. फुलवाटी, पैाधा, मुफ्त ।

नये संबोध - फुलवारी ।

नये शब्द - पैाधा, चमेली, मुफ्त, चाहना ।

मुहावरे, कहावते । प्रस्तुत पाठ में नहीं है ।

० मौखिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा. चमेली, चाहना ।

भाषण - संभाषण - उदा. चमेली, चाहना । संभाषण करने समय शब्दों की -ह्रस्व एवं दीर्घ मात्रा पर ध्यान देना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व मात्रा व दीर्घ मात्रा तथा विरामचिह्नों पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन तथा पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - शब्द भंडार बढाने की दृष्टि से प्रस्तुत पाठ में कुछ नये शब्द आए हैं, जिन्हें छात्र शीघ्रता के कारण गलत रूप से लिखते हैं । छात्रों को शब्दों का सही रूप समझाना । उदा. चाहना, मालो । छात्रों को पाठ में आए एकवचन तथा बहुवचन वाले शब्द चुनकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र अपनी अलग फुलवाटी बनाने के लिए प्रेरित होते हैं । साथ ही एकवचन व बहुवचन के बारे में जानकारी लेते हैं ।

पाठ क्रमांक - ११ (गद्य) । शीर्षक - किसान ।
युग - आधुनिक युग । विधा - वर्णनात्मक गद्य पाठ ।
संरचना में स्थान - गद्य पाठ ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - किसान बडे सबेरे उठता है,बैलों को चारा-पानी देता है । जलपान कर के खेत में जाता है । परिश्रम कर के अनाज पैदा करता है । अनाज बैलगाडी से मंडी भेजता है। इस प्रकार किसान हमारा अन्नदाता है ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को भारतीय किसान की महत्ता समझाना तथा पुल्लिंग व स्त्रीलिंग के बारे में जानकारी देना ।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - वर्ण - संयोग - अन्न,राष्ट्र,
संधियुक्त शब्द - अन्नदाता,भूमि पुत्र ।
वाक्य प्रकार - सरल व संक्षिप्त वाक्य ।
कारक - संबंध कारक,कर्म कारक,अधिकरण कारक,करण कारक,।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक ।
काल विचार - सामान्य वर्तमान काल ।
० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं । उदा.जागना,परिश्रम,भेजना ।
लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी मराठी के प्रभाव के कारण गलती करते हैं । उदा.चारा,मदद,राष्ट्र ।
नये संबोध - राष्ट्र,अन्नदाता,भूमिपुत्र ।

नये शब्द - मुर्गा, कलेवा, मदद, अनाज, सचमूच, बाँग ।

मुहावरे - परिश्रम करना, मदद करना, पैदा करना ।

कहावतें - नहीं है ।

० मार्गिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा. जागना, चारा, परिश्रम, मदद, मेजना ।

भाषण - संभाषण - उदा. जागना, चारा, मदद, मेजना, परिश्रम । कक्षा में मेहनत करने वाले किसानों के बारे में चर्चा की जा सकती है ।

वाचन - अध्यापकों ने पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय विरामचिह्न, शब्दों की -ह्रस्व तथा दीर्घ मात्रा पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन तथा पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसे किसान से संबंधित ऐसे ही पाठ पढने के लिए प्रेरित करना चाहिए ।

लेखन - छात्रों को शब्दों का सही रूप समझाना । उदा. बाँग, मदद, परिश्रम । छात्रों को पाठ में आए पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द चुनकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र भारतीय किसान का महत्त्व समझाते है तथा छात्रों को लिंग के बारे में जानकारी प्राप्त होती है ।

पाठ क्रमांक - १२ (पद्य) । शीर्षक - मीठे बोल ।

युग - आधुनिक । विधा - काव्य ।

संरचना में स्थान - उपदेशपरक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - कौआ, कोयल, दीदी से पूछता है कि तुम किस वजह से जग में आदर पाती हो, और मुझे क्यों दूतकारा जाता है । तब कोयल दीदी बताती है कि हम दोनों का तन समान है, लेकिन फर्क यह है कि तुम्हारे बोल कटुवे लगते हैं और मेरे बोल मीठे हैं । तुम भी यदि मीठे बोलोगे तो जग में आदर

पा सकते हो ।

कविता का उददेश्य - छात्रों को समझाना कि जग में आदर पाने के लिए मीठे बोल और शालीनता की जरूरी है ।

० व्याकरण - कारक - अधिकरण कारक, संबंध कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम, प्रश्न चिह्न, पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का छात्र गलत रूप से उच्चारण करते है । उदा. कड़ुवा, कुछ, मधु ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. क्यों, में, कौआ ।

नये संबोध - शीत, मीठे ।

नये शब्द - तन, कौआ, मेद, दुतकारना, कड़ुवा, मधु-सी , पोल ।

मुहावरे - आदर पाना, कड़ुवा लगना ।

० मौखिक उददेश्य - श्रवण आकलन - उदा. कड़ुवा, कुछ, मधु । अध्यापकों ने शब्दों का मानक उच्चारण नहीं किया तो छात्रों को शब्दों का ठीक आकलन नहीं होगा ।

मौखण - समौखण - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण चाहिए और छात्रों को शब्दों मानक उच्चारण समझाना चाहिए । उदा. कड़ुवा, कुछ, मधु ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का सस्वर वाचन करना चाहिए । सस्वर वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा व आरोह - अवरोह पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को कौआ और कोयल पात्र बनाकर कविता का सस्वर वाचन लेना चाहिए ।

लेखन - प्रस्तुत कविता में आये नये शब्दों को ठीक तरह छात्रों से लिखवाना चाहिए । उदा.क्यों, में,मधु ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि मीठे बोल से या शालीनता से मनुष्य जग में आदर पाता है ।

पाठ क्रमांक - १३ (गद्य) । शीर्षक - लालची कुत्ता ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।
पाठ की संक्षिप्त आशय - एक भूखा कुत्ता रोटी लेकर नदी के पूल पर आता है उसे पानी में उसकी परछाई दिखाई देती है । दूसरी रोटी के लिए वह भौंकता है,रोटी पानी में गिर जाती है । अंत में कुत्ता भूखा रह जाता है ।
पाठ का उद्देश्य - मनुष्य ने अधिक लालच नहीं दिखाना चाहिए । मनुष्य को जितना मिलता है उस में ही संतुष्ट रहना चाहिए । सामान्य भूतकाल की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वाक्य प्रकार - सरल एवं संक्षिप्त वाक्य,विधानार्थक वाक्य ।
कारक - कर्ता कारक,कर्म कारक,संबंध कारक,अधिकरण कारक ।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम,बडा निर्देशक,छोटा निर्देशक ।
काल विचार - सामान्य भूतकाल,पूर्ण भूतकाल,पूर्ण वर्तमानकाल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी -- छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का गलत रूप से उच्चारण करते है । उदा.भूखा,बढा,मिला,मालिक,दयालु ।
लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में गलतियाँ करते हैं । उदा.मुँह,भौंका,नहीं ।

नये संबोध - लालच, भूख, नदी ।

नये शब्द - रास्ता, कुत्ता, मुँह, रोटी, दूर, सँकरा ।

मुहावरे - छीन लेना, आगे बढना ।

० मार्गिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - हिन्दी के कुछ वर्ण और मातृभाषा के कुछ वर्णों में अंतर है । प्रस्तुत पाठ में एक शब्द आया है ` बढा` उसका अध्यापकों ने मानक उच्चारण करना चाहिए ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । वाक्य या परिच्छेद में आए चिह्नों पर गौर करके उस के नुसार उच्चारण करना चाहिए । वाक्यों में भावों की अभिव्यक्ति होती है, अत: भाव के अनुसार भाषण - संभाषण करना चाहिए । अध्यापक का भाषण-संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने पाठ का अध्यापन करते समय सस्वर वाचन करना चाहिए । लिखित वर्णों का सह-संबंध स्थापित करना चाहिए । उदा. भूखा, मुँह । छात्रों को ऐसी अन्य कहानियों का वाचन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए ।

लेखन - छात्र लिखते समय मराठी के प्रभाव के कारण या शीघ्रता के कारण गलतियाँ करते हैं । अध्यापकों ने छात्रों को यह समझाना चाहिए कि शब्दों को ठीक तरह से कैसे लिखा जाय । उदा. कुत्ता, बढा, मुँह । छात्रों को पाठ में आयी सामान्य भूतकाल की क्रियाओं को छाँटकर बही में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र सामान्य भूतकाल की क्रियाओं को समझाते हैं । तथा यह जानते है कि जितना प्राप्त होता है उसमें मनुष्य ने संतुष्ट रहना चाहिए ।

पाठ क्रमांक - १४ (गद्य) । शीर्षक - जमील के साथी ।

युग - आधुनिक । विधा - एकांकी

संरचना में स्थान - उपदेशात्मक एकांकी

पाठ का संक्षिप्त आशय - सैर करने के लिए दीपक, नीना, बानो, अजय, शमा पीटर और जमील जाने वाले हैं। लेकिन जमील को बुखार आता है। वे सब उसे देखने के लिए जाते हैं। जमील को पीटर कहानी सुनाचा है। शमा गीत सुनाती है। अजय फूल देता है। सभी नदी किनारे सैर करने जाते हैं।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि जाति-धर्म की शृंखला तोड़कर हर मनुष्य के सुख-दुख में शामील होना चाहिए। पुरूष वाचक सर्वनामों की जानकारी देना।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - नुक्तावाला शब्द - दौड़ना। बड़ा,

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, सरल व संक्षिप्त वाक्य।

कारक - अधिकरण कारक, संबंध कारक, कार्य कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न, अल्प विराम, छोटा निर्देशक,।

काल विचार - भविष्यकाल, सामान्य वर्तमान काल।

o वर्तनी - मैखकि वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं। उदा. दौडा, मजा, बडा।

लिखित वर्तनी - मैाखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा. बडा, झँगा छोडना।

नये संबोध - बीमारी, गीत।

नये शब्द - साथी, सैर, बुखार, लेकिन।

मुहावरे - मजा आना।

कहावते - नहीं है।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - छात्रों को शब्दों का सही आकलन होना चाहिए । उदा.बड़ा,छोड़ना,दूँगा ।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण अध्यापकों ने छात्रों को समझाना चाहिए ।(उदा.बडा,छोडना) और एकांकी रूप से नाटयीकरण करना चाहिए ।

वाचन - वाचन नाटकीय शैली में होना चाहिए । वाचन करते समय आरोह - अवरोह या शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा का ध्यान रखना चाहिए । छात्रों को नाटयीकरण के रूप में पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण गलती करते हैं । उदा.बड़ा,नहीं,छोडना ।इन शब्दों को छात्रों द्वारा ठीक तरह से लिखना चाहिए । छात्रों को पाठ में आए पुरूषवाचक सर्वनाम चुनकर वही में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - मनुष्य के सुख-दुख में शामील होना चाहिए और पुरूष वाचक सर्वनामों की जानकारी छात्रों को मिलती है ।

पाठ क्रमांक - १५ (पद्य) । शीर्षक - दीवाली आई ।
युग - आधुनिक । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - दीवाली के कारण चारों ओर खुशी की लहर आती है । आसमान पर तारे और धरती पर दीपक प्यारे है । लाल-लाल नन्हें सूरज के कारण सभी दिशाएँ जगमगाती हैं । यह धरती हमारी माता है और हम उसके बेटे हैं ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों के मन पर यह अंकित करना कि यह धरती हमारी

माता है और हम उस के बेटे हैं, इसी कारण हम सब भाई-भाई हैं। छात्रों को ' ई ' अंत वाले शब्दों की जानकारी देना।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्ति वाले शब्द - भाई-भाई, घर-घर, लाल-लाल।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक।

विराम चिह्न - छोटा निर्देशक, पूर्ण विराम, अल्पविराम।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल, भविष्य काल।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का गलत उच्चारण करते हैं। उदा. सूरज, जगमग।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में गलतियाँ करते हैं। उदा. नन्हें, हैं।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए। उदा. सूरज, जगमग।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों को समझाना चाहिए। अध्यापक का भाषण-संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए।

वाचन - अध्यापकों ने कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए। वाचन करते समय आरोह - अवरोह पर ध्यान देना चाहिए। छात्रों को कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए। छात्रों को त्योहार से संबंधित ऐसी अन्य कविताएँ पढने के लिए कहा जा सकता है।

लेखन - लेखन की दृष्टि से या शब्द भंडार बढाने की दृष्टि से कविता में नये शब्द आए हैं, जिन्हें छात्र शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलत रूप से लिखते हैं। उन्हें ठीक तरह से छात्रों की ओर से लिखवाना चाहिए। उदा. नन्हें, हैं, दीवाली। ' ई ' अंत वाले शब्दों का लेखन लेना चाहिए।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में यह भावना जागृत होती है कि हम सब भाई-भाई हैं। छात्र ` ई ` अंत वाले शब्दों को समझाते हैं।

पाठ क्रमांक - १६ (गद्य)। शीर्षक - बाजार।
युग - आधुनिक। विधा - निबंध।
संरचना में स्थान - संवादात्मक पाठ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - रविवार बाजार का दिन है। सभी बाजार जाते हैं। कोई खिलौने तो कोई कैरम बोर्ड खरीदता है। कोई आईसक्रीम खाता है। मामी आलू, प्याज, गोभी, खरीदती है।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को प्रश्नवाचक सर्वनामों की तथा बाजार में मिलने वाली चीजों की जानकारी देना।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - साथ-साथ, द्विरुक्ति वाला शब्द।
वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, संक्षिप्त वाक्य।
कारक - संबंध कारक, संप्रदान कारक।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, आश्चर्य चिह्न, प्रश्नचिह्न, छोटा निर्देशक।
काल विचार - सामान्य भूतकाल।
० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में कुछ नये शब्द आए हैं, जिनका उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं। उदा. रहना, हैं, कैरम।
लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा. रहना, कैरम, आलू, बडी, गोभी।
नये शब्द - खिलौना, गेंद।

नये शब्द - चाची, खरीदना, आलू, प्याज, गोभी, केले, अंगूर, गेहूँ, चावल, दाल, कैरम ।

मुहावरे - मजा आना ।

० मानसिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. रहना, गेहूँ, कैरम, गोभी ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए और छात्रों को शब्दों का मानक उच्चारण समझाना चाहिए । छात्रों की ओर से शब्दों का मानक उच्चारण करवाना चाहिए । अध्यापक का भाषण एवं संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभाव पूर्ण होना चाहिए । उदा. गेहूँ, कैरम ।

वाचन - छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन तथा पाठ का आशय समझाने के लिए छात्रों को मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - अध्यापकों ने नये शब्दों को छात्रों द्वारा लिखवाना चाहिए । उदा. रहना, कैरम, गोभी । छात्रों को प्रस्तुत पाठ में आए प्रश्नवाचक सर्वनाम चुनकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान- छात्रों को प्रश्नवाचक सर्वनामों की जानकारी होती है और छात्र बाजार में मिलने वाली चीजों को जानते हैं ।

पाठ क्रमांक - १७ (गद्य) । शीर्षक - महात्मा गाँधी ।
युग - आधुनिक युग । विधा - व्यक्तिचित्र ।
संरचना में स्थान - उपदेशपरक व्यक्तिचित्र ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - गांधीजी सत्य के उपासक थे । एक दिन गांधीजी पाठ शाला में व्यायाम के लिए देर से पहुँचे,तो देरी का सच कारण बताने पर भी शिक्षकों ने उन्हें सजा दी । गांधीजी जान गए कि सच बोलने वाले को समय का ध्यान रखना चाहिए ।

पाठ का उद्देश्य - सच बोलने वाले ने समय का ध्यान भी रखना चाहिए । छात्रों को सजा के बारे में जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त शब्द - महात्मा, समयपालन,द्विरुक्ति वाले शब्द - ठीक-ठीक,सच-सच ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य,संयुक्त वाक्य ।

कारक - संप्रदान कारक,करण कारक,अधिकरण कारक,कर्ता कारक, संबंध कारक,अपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्पविराम,छोटा निर्देशक,अवतरण चिह्न ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,सामान्य भूतकाल,अपूर्ण वर्तमान काल, पूर्ण भूतकाल,सामान्य भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.कहना,बचपन,सजा,चलन ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.धडी,दिन,बडा,दुख ।

नये संबोध - समय पालन,स्वतंत्र,सजा महात्मा ।

नये शब्द - अक्तूबर,बचपन, बादल, अंदाजा,जागरूक ।

मुहावरे - सत्यपर चलना,निश्चय करना,अंदाजा लगाना,अनुभव करना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा.घडी,बडा,पहुँचना,सच,सजा ।

भाषण - संभाषण - उदा.घड़ी,सच,सजा पहुँचना,जागरूक ।

वाचन - वाक्य या परिच्छेद में आए विराम चिह्नों पर ध्यान देकर उसके अनुसार वाचन करना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर व मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को गांधीजी से संबंधित अन्य लेख पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय गलतियाँ करते हैं ।

उदा. सजा,घड़ी,जागरूक,दिन ये शब्द छात्र सज्या,घड़ी,ज्यागरूक,दीन इस रूप में लिखते हैं । अध्यापकों ने इन शब्दों का छात्रों द्वारा मानक लेखन लेना चाहिए । छात्रों को गांधी जी पर दस पंक्तियाँ लिखने के लिए कहा जा सकता है । छात्रों को प्रस्तुत पाठ में आयी संज्ञाओं को चुनकर बही में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि सच बोलने वाले को समय पालन का ध्यान रखना चाहिए । साथ ही छात्रों को संज्ञाओं की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक - १८ (पद्य) । शीर्षक - संदेश ।

युग - आधुनिक । विधा - कविता ।

संरचना में स्थान - - उपदेशात्मक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - पर्वत हमें ऊँचा उठने तथा सागर मन में गहराई लाने का संदेश देता है । तरंग दिल में उमंग भरने तथा धरती कभी धैर्य न छोड़ने का संदेश देती है । आकाश सारे संसार में फैलने का संदेश देता है ।

कविता का उद्देश्य - पर्वत,सागर,धरती,नभ की सीख के माध्यम से छात्रों की महत्वकांक्षा को बढाना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरूक्तिवाले शब्द - उठ-उठ, गिर-गिर,मीठी-मीठी ।

कारक - अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम, पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - भविष्य काल, अपूर्ण वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का गलत रूप से उच्चारण करते हैं । उदा. लहराकर, मृदुल, ढँक ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. लहराकर, तरंग, कहना ।

नये संबोध - पर्वत, सागर ।

नये शब्द - शीशा, लहराकर, तरंग, तरल, मृदुल, उमंग, ढँकना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा. मृदुल, ढँकना, लहराकर ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए और छात्रों द्वारा मानक उच्चारण करवाना चाहिए । उदा. मृदुल, ढँकना, लहराकर ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय विराम चिह्न और आरोह - अवरोह का ध्यान रखना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्द शीघ्रता के कारण गलत रूप से लिखते हैं । उदा. लहराकर, मृदुल, ढँकना ये शब्द लेहराकर, मीदुल, ढँकना के रूप में f लिखते हैं । छात्रों को सही रूप समझाना ।

० पाठयक्रम केउद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - पर्वत, सागर, धरती, नभ की सीख समझाकर छात्रों को महत्वकांक्षा बढती है ।

पाठ क्रमांक - १९ (गद्य) । शीर्षक - बकरी की चतुराई ।

युग - आधुनिक । विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - गडरिया ने बकरियों को जंगल में चरने के लिए छोडा है । नन्हीं बकरी दूर भेड़िया के सामने जाती है । वह भेड से कहती है, मैं पहले गाना गाऊँगी बाद में तू मुझे खा । बकरी की आवाज से गडरिया वहाँ पहूँचता है और भेडिया भाग जाता है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि संकट के समय मनुष्य ने चतुराई से काम करना चाहिए । छात्रों को भूतकाल की क्रियाओं की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - ` ड़ ` वर्ण से बने शब्द, छोड़, भेड़िया, खड़ा, बड़ी, गड़रिया ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - कर्ता कारक, करण कारक, आपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, बडा निर्देशक, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में जो नये शब्द आए हैं उन का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं । उदा. गडरिया, भेडिया, खडा, छोडना ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । दूर , बहुत ।

नये संबोध - चतुराई ।

नये शब्द - गडरिया, डरना, चीखना, मूँदना ।

मुहावरे - जान बचाना, आँखें मूँदना ।

भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए ` ढ ` वर्ण से बने शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा.गढरिया,भेढ़िया, औंखें,छोड़ ।

भाषण - संभाषण - उदा.गढ़रिया,भेढ़िया,छोड़ना । छात्रों को समझाना चाहिए कि ` आँखें ` शब्द का उच्चारण करते समय ` आँ ` का उच्चारण आधे ` न ` की तरह होता है ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का भावपूर्ण एवं सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढ़ने के लिए कहा जा सकता है ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय गलतियाँ करते हैं, अध्यापकों ने उन्हें सही रूप से कैसे लिखा जाय यह समझाना चाहिए ।उदा. गढ़रिया,भेढ़िया, ये शब्द छात्र गडरीया,भेडीया इस रूप में लिखते हैं । छात्रों को पाठ में आयी भूतकाल की पाँच क्रियाओं को चुनकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को भूतकाल की क्रियाओं की जानकारी होती है और छात्र समझते हैं कि संकट के समय मनुष्य ने चतुराई से काम लेना चाहिए ।

पाठ क्रमांक - २० (गद्य) ।   शीर्षक - रामपुर का मेला ।
युग - आधुनिक युग ।   विधा - निबंध ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक पाठ ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - लोग दूर-दूर से मेले में सज-धजकर आते हैं । मेले में तरह-तरह की दूकाने होती हैं । व्यापारी,खिलौने,कपड़े,गुड़िया,बेचते हैं । लोग खरीदते हैं । मेले में झूले होते हैं । मेले में शाम को बहुत भीड़ होती है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को संख्यावाचक व गुणवाचक विशेषण के बारे में जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्ति वाले शब्द - दूर-दूर, तरह-तरह, खुशी-खुशी ।

वाक्य प्रकार - संयुक्त एवं सरल वाक्य ।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, संप्रदान कारक, कर्मकारक, अपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक, अल्पविराम ।

काल विचार - पूर्ण वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. आज, सज-धजकर, खिंचना ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. साइकील, खिलौना, जलेबी ।

नये संबोध - झूलना, मेला ।

नये शब्द - साइकील, खिलौना, झूला, अजीब, रोशनी, दूकान, तस्वीर ।

मुहावरे - अजीब-सा लगना, अतिशबाजी होना ।

भाषिक - उद्देश्य - श्रवण - आकलन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा. आज, सज - धजकर, खिंचना, साइकील, जलेबी ।

भाषण-संभाषण - उदा. जलेबी, सजना, आज । अध्यापक का भाषण-संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा का ध्यान रखना चाहिए ।

लेखन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को छात्र गलत रूप से लिखते हैं। अध्यापकों ने नये शब्द छात्रों द्वारा सही रूप से लिखवाने चाहिए। उदा.साइकिल,बैलगाडी, ये शब्द छात्र सायकल,बैलगाडी,इस रूप में लिखते हैं। छात्रों को पाठ में आए गुणवाचक व संख्यावाचक विशेषण दर्शक शब्द चुनकर वही में लिखने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को संख्यावाचक व गुणवाचक विशेषण के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

पाठ क्रमांक - २१ (पद्य) शीर्षक - सोच रहा था।
युग - आधुनिक युग। विधा - कविता।
संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कविता।
कविता का आशय - कवि धरती पर बाग बनाना चाहता है। लेकिन भूमि नहीं मिलती। फिर कवि आँगन के एक कोने में पेड लगाता है,जो कवि को भाई कहके पुकारता है।
कविता का उद्देश्य - छात्रों को वृक्षारोपण का महत्त्व समझाना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - `ड` वर्ण के शब्द - पेड,थोडी-सी।

कारक - कर्ता कारक,संबंध कारक,अधिकरण कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्पविराम,छोटा निर्देशक।

काल विचार - अपूर्ण भूतकाल,सामान्य वर्तमानकाल।

० वर्तनी-मौखिक वर्तनी -- प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूपसे करते हैं। उदा.सोच,जगीचा,आँगन,जो।
लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा.कहीं,थोड़ी-सी,आँगन।

नये संबोध - बाग, पेड़ ।

नये शब्द - धरती, कोना, आँगन ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का अध्यापकोंने मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा. सोचना, आँगन, जो ।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों द्वारा करवाना चाहिए । उदा. बगीचा, जो, आँगन, सोच ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को कविता का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - प्रस्तुत कविता में आए कुछ शब्द जो छात्र गलत लिखते हैं उन्हें सही लिखवाना चाहिए । उदा. कहीं, आँगन, थोड़ी-सी, जो, छात्र, आंगन, थोडी-सी, ज्यो इस रूप में लिखते हैं । छात्रों को रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र वृक्षारोपण के महत्त्व को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक २२ - (गद्य) । शीर्षक - कामचोर गधा ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेशपरख कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - एक कामचोर गधा नमक का बोरा लेकर हर रोज पानी में बैठा करता है । जिस से बोझ हलका होता था । व्यापारी गधे पर रूई का गट्ठर लादता है । तो गधे को कामचोरी का परिणाम भुगतना पड़ता है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्र समझाते हैं कि कामचोरी करने वाले को उस के किये की सजा मिलती है । छात्रों को गुणवाचक तथासंख्यावाचक विशेषणों की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त शब्द - कामचोर,एकाएक ।

वाक्य प्रकार - सरल व संक्षिप्त वाक्य,प्रधान व गौण वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक,संबंध कारक,कर्ता कारक,संप्रदान कारक ,आपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य भूतकाल,सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का छात्र गलत रूप से उच्चारण करते हैं । उदा.कामचोर,गधा,पानी,बोझ ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.गधा,दिन,पानी,बोझा,गट्ठर ।

नये शब्द - परेशान,बोरा,नमक,रूई,गट्ठर,गधा,तकलीफ ।

मुहावरे - गिर पडना,डूब जाना,उपाय ढूँढना,तकलीफ होना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.कामचोर,पानी,बोझा,गधा ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों द्वारा करवाना चाहिए । उदा.कामचोर,गधा,पानी,बोझा ।

वाचन - अध्यापकों ने पाठ का प्रभावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन तथा पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को गलत रूप से लिखते हैं।

अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का सही रूप समझाना चाहिए। उदा.गधा,बोझा, दिन,पानी,मट्ठर ये शब्द छात्र गदा,बोज,दीन,पाणि,गठ्ठर के रूप में लिखते हैं। छात्रों के पाठ में आए गुणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषणों कि चुनकर वही में लिखने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि कामचोरी करने वाले को उसके किये की सजा मिलती है। छात्रों को गुणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषणों की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक २३ - (गद्य) शीर्षक - डाक घर।

युग - आधुनिक । विधा - वर्णनात्मक पाठ।

संरचना में स्थान - वर्णनात्मक गद्य।

पाठ का संक्षिप्त आशय - डाक घर में हमें पोस्टकार्ड,अंतर्देशीय पत्र,लिफाफा, मिलता है। तार द्वारा हम संदेश भेज सकते हैं। मनीआर्डर द्वारा उपहार, पैसे,भेजे जा सकते हैं। डाकघर में रूपयों की बचत भी की जा सकती है।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को डाकघर की जानकारी देना और आज्ञार्थक क्रियाओं को समझाना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त शब्द - संदेशवाहक, डाकघर,पोस्टकार्ड,मनीआर्डर,अंतर्देशीय।

वाक्य प्रकार - सरल व संक्षिप्त वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,प्रश्नार्थक चिह्न,छोटा निर्देशक,बडा निर्देशक, अल्पविराम,अवतरण चिह्न।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,भविष्य काल।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.अंतर्देशीय,लिफाफा,बचत,भेजना,आर्डर ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.अंतर्देशीय,लिफाफा,मनीआर्डर,केवल,पता ।

नये संबोध - अंतर्देशीय पत्र,मनीऑर्डर,पार्सल,पता ।

नये शब्द - अंतर्देशीय पत्र,मनीआर्डर,पार्सल,पता ।

मुहावरे - लाभ उठाना,सेवा करना,संदेश भेजना ।

० मौखिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का अध्यापकों ने मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा.अंतर्देशीय,बचत,लिफाफा, मनीऑर्डर,भेजना ।

भाषण - संभाषण - उदा.बचत,लिफाफा,मनीआर्डर,भेजना,अंतर्देशीय ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व एवं दीर्घ मात्रा पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन तथा पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को पास के डाकघर में जाकर अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कहा जा सकता है ।

लेखन - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को छात्र गलत रूप से लिखते हैं । उदा. केवल ,पता,अंतर्देशीय,लिफाफा,ये शब्द छात्र केवळ ,पत्ता,अंतरदेशीय, लिफाफा के रूप में लिखते है । छात्रों की ओर से शब्दों का सही रूप लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को प्रस्तुत पाठ में आयी आज्ञार्थक क्रियाओं को चुनकर कापि में लिखने केलिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उददेश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को डाकघर की जानकारी होती है और छात्र आज्ञार्थक क्रियाओं को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - २४ (पद्य) शीर्षक - वसंत।

युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।

संरचना में स्थान - प्रकृति वर्णन परख कविता।

कविता का संक्षिप्त आशय - वसंत ऋतु के कारण चारों ओर हरियाली छायी है । फूल खीले हैं,कोयल कूक रही है । चारों ओर फूलों की मीठी गंध फैली है ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों के मन में प्रकृती प्रेम जागृत करना और शब्दों के दीर्घ उच्चारण को समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - नए-नए, डाली-डाली,प्यारी-प्यारी ।

कारक - संप्रदान कारक,संबंध कारक,अपादान कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम,छोटा निर्देशक,पूर्ण विराम ।

काल विचार - पूर्व वर्तमान काल,सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का गलत रूप से उच्चारण करते है । उदा.चंपा,चमेली,सुख,टहलना,जूही ।

लिखित वर्तनी - मौखिक की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा.उपजाती,टहलना,चंपा,सुख ।

नये संबोध - गंध ।

नये शब्द - चमेली,जूही,अलबेली,कूकना,टहलना ।

० भाषिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा.चंपा,चमेली,जूही,टहलना ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने चंपा,जूही,टहलना,चमेली,का मानक उच्चारण करना चाहिए और छात्रों द्वारा शब्दों का मानक उच्चारण करवाके लेना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और आरोह-अवरोह पर ध्यान देना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही प्रकृति वर्णन परक कविता पढने के कहना चाहिए ।

लेखन - अध्यापकों ने छात्रों द्वारा नये शब्दों को ठीक तरह लिखकर लेना चाहिए । उदा.टहलना,उफजाती । छात्र टेहलना,उफजाति इस रूप में लिखते हैं । छात्रों को प्रस्तुत कविता में आए ` ली ` अंतवाले शब्दों को चुनकर कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में प्रकृति प्रेम जागृत होता है और छात्र शब्दों के दीर्घ उच्चारण को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - २५ (पद्य) । शीर्षक - टोपीवाला और बंदर ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - एक टोपीवाला पेड की छाया में लेट गया था । पेड पर रहने वाले बंदरों ने गठरी में से टोपियाँ निकाल कर पहन लीं । टोपीवाले ने नींद खुलने पर यह दृश्य देखा । उसने अपनी टोपी जमीन पर पटक दी । बंदरों ने वैसा ही किया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को एकवचन व बहुवचन की जानकारी देना । छात्रों को समझाना कि मनुष्य ने कठिन प्रसंग में शक्ति से नहीं तरकीब से काम करना चाहिए ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त शब्द - टोपीवाला ।

वाक्य प्रकार - सरल व संक्षिप्त वाक्य, प्रधान व गौण वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक, संबध कारक, कर्ता कारक, संप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, छोटा निर्देशक, बडा निर्देशक ।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल, भविष्य काल, सामान्य वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं । उदा. बेचना, पहनना, कोशिश, जमीन ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. कोशिश, पहनना, फेंको ।

नये संबोध - टोपी ।

नये शब्द - गायब, टोपीवाल, पीली, छाया, गठरी ।

मुहावरे - थक जाना, गायब होना, कोशिश करना, चल पडना ।

o मौखिक - उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा. जमीन, बेचना, पहनना, कोशिश, नीली, पीली ।

भाषण - संभाषण - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उदा. जमीन, बेचना, पहनना, कोशिश, नीली, पीली, मानक उच्चारण छात्रों की ओर से करवा के लेना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही अन्य वर्णनात्मक कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र हिन्दी के शब्द गलत रूप से लिखते हैं। प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द उदा.कोशिश,पहनना,फेंकी,ये शब्द छात्र कोशीश,पेहनना,फेकी,के रूप में लिखते हैं। अध्यापकों ने इन शब्दों को सही रूप में छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को कुछ शब्द देकर उनके वचन बदलकर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को एक वचन व बहूवचन की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक - २६ (पद्य)। शीर्षक - देश हमारा।
युग - आधुनिक युग। विधा - कविता(समुह गीत)।
संरचना में स्थान - राष्ट्र प्रेम परक कविता।

कविता का संक्षिप्त आशय - हमारा भारत देश सदियों से ध्रुव तारें की तरह जग में चमक रहा है। भारत देश हमे बहुत प्यारा है। यहाँ अलग वेश-रंग के लोग रहते हैं। फिर भी उन में एकता है।
कविता का उद्देश्य - छात्रों में राष्ट्र प्रेम जागृत करना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टिसे - द्विरुक्ति वाले शब्द - दूर- दूर, संग - संग।
कारक - करण कारक,आपादान कारक,संबध कारक,अधिकरण कारक।
विराम चिह्न - अल्प विराम,पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक।
काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं। उदा.दूर-दूर,जल, जग।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा.हरियाली,पँछी,हमें।

नये संबोध - रंग,एकता,बल,पर्वत।

नये शब्द - ध्रुवतारा,सदी,गगन,पँछी,तन।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण-आकलन - जब अध्यापक शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं। तब छात्र सुनते हैं और छात्रों को शब्दों का सही आकलन होता है। इस लिए प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का अध्यापकों ने मानक उच्चारण करना चाहिए। उदा.दूर-दूर,जग,चूमना, झूमना।

भाषण - संभाषण - उच्चारण की दृष्टि से प्रस्तुत कविता में महत्त्वपूर्ण शब्द जग,दूर-दूर,चूमना।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए। वाचन करते समय आरोह - अवरोह पर ध्यान देना चाहिए। वाचन में ओज गुण आवश्यक है। छात्रों को कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए। अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही राष्ट्र प्रेम परख कविता पढने के लिए कहना चाहिए। और प्रस्तुत कविता कंठस्थ करने के लिए कहना चाहिए।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्द लिखते समय गलतियाँ करते हैं।

उदा.हमें,पँछी,हरियाली,दूर-दूर ये शब्द छात्र हमे,पँक्षी,हरीयाली,दूर-दूर के रूप में लिखते हैं। अध्यापकोंने नये शब्दों को छात्रों की ओर से सही रूप में लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को कविता के आधार पर उचित जोडियाँ लगाने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम जागृत होता है।

(आ) कक्षा छठी - श्रवण - आकलन,भाषण-संभाषण,वाचन,लेखन ।

पाठ क्रमांक - १- (पद्य) । शीर्षक - भारत देश महान ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।

संरचना में स्थान - देशभक्तिपरक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - हमारा भारत देश सबसे महान है । भारत देश में ऊँच-ऊँचे पर्वत है,झरने है,रंगबिरंगे पँछी है । विविधता है एकता है ।

कविता का उद्देश्य - भारत की विविधता में एकता को समझाकर छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम जागृत करना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त शब्द - पंखोवाले,गुणगाण ।

कारक - करण कारक,अधिकरण कारक,संबंध कारक ।

विराम चिह्न - छोटा निर्देशक,अल्प विराम,पूर्ण विराम ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का गलत रूप से उच्चारण करते है । उदा.पहरेदार,ऊँचे-ऊँचे ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा.पहरेदार,ऊँचा-ऊँचा,नदीयाँ ।

नये संबोध - गुलजार,कलोल ।

नये शब्द - पहरेदार,रंग-बिरंगा,पहरेदार ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन -उदा.ऊँचे-ऊँचे,नदियाँ,पहरेदार ।

भाषण-संभाषण - उदा.पहरेदार,ऊँचे-ऊँचे,नदियाँ । अध्यापक का भाषण - संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा का ध्यान रखना चाहिए । साथ ही आरोह-अवरोह पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को कविता का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापक का वाचन ओजपूर्ण होना चाहिए । छात्रों की ओर से ओजपूर्ण ढंग से कविता का वाचन लेना चाहिए । अध्यापकों ने ऐसी ही अन्य राष्ट्रभक्तिपरक कविता छात्रों को पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्द लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते है । उदा.ऊँचे-ऊँचे,पहरेदार,नदियाँ शब्द छात्र ऊँचे-ऊँचे,पेहरेदार,नदीयाँ के रूप में लिखते हैं । अध्यापकों ने ये शब्द सही रूप में छात्रों की ओरसे लिखकर लेने चाहिए । छात्रों को ' भारत की विविधता में एकता' विषय पर दस पंक्तियाँ कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उददेश्य की दृष्टिसे पाठ का स्थान - छात्र भारत की विविधता में एकता को समझाते हैं और छात्रों के मन में राष्ट्र प्रेम जागृत होता है ।

पाठ क्रमांक - २ (गद्य) । शीर्षक - स्वावलंबन ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी
संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - गाँधीजी को मिलने एक सज्जन आए थे । उन्होंने फटा हुआ कपडा पहना था । गाँधीजी ने कपडा सिलाने की सलाह दी मगर सज्जन बोले दर्जी अन्य काम में व्यस्त था । गाँधीजी ने कहा खुद का काम खुद ही करना चाहिए । तब सज्जन अपनी गलती समझ गया और स्वावलंबी बन गया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि मनुष्य ने खुद का काम खुद ही करना चाहिए और स्वावलंबी बनना चाहिए। साथ ही छात्रों को पुल्लिंग एकवचन व बहुवचन और जातिवाचक संज्ञाएँ और व्यक्तिवाचक संज्ञा की जानकारी देना।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - ' ड़ ' और ' ढ़ ' वर्ण से बने शब्द बड़ा - कपड़ा, पढ़ना।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, मिश्र वाक्य।

कारक - कर्ता कारक, कर्म कारक, संबंध कारक, करण कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अवतरण चिह्न, अल्पविराम, छोटा निर्देशक, प्रश्न चिह्न।

काल विचार - भूतकाल व वर्तमान काल।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं। उदा. पहनना, कहना, रहना, कपड़ा, बहुत, ताँता।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा. हाथ, कपड़ा, पहनना, कहना, रहना, बहुत, तांता।

नये संबोध - स्वावलंबन, लज्जा, सब्जी।

नये शब्द - तांता, चाव, अचरज।

मुहावरे - तांता लगना, अचरज का ठिकाना न रहना।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. कहना, पहनना, रहना, बड़ा, कपड़ा।

भाषण संभाषण - उदा. चाव, कहना, बड़ा, कपड़ा, रहना, पहनना।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए। वाचन करते समय वाक्य व परिच्छेद में आए विरामचिह्नों का ध्यान रखना चाहिए। छात्रों को गांधीजी से संबंधित ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढ़ने के लिए कहना चाहिए।

लेखन - कहना,बड़ा,कपड़ा,पहनना,रहना,ये शब्द छात्र केहना,बडा,कपडा,पेहनना, रेहना इस रूप में लिखते हैं। अध्यापकों ने नये शब्दों को छात्रों की ओर से सही रूप में लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को जातिवाचक संज्ञा और व्यक्ति वाचक संज्ञा के शब्द देकर दो विभागो में विभाजीत करके कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि मनुष्य ने खुद का काम खुद ही करना चाहिए और स्वावलंबी बनना चाहिए। साथही छात्रों को पुल्लिंग एकवचन व बहुवचन और जातिवाचक संज्ञा व व्यक्तिवाचक संज्ञा की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक -३- (गद्य) । शीर्षक - नेहा की योजना।
युग - आधुनिक युग । विधा - वर्णनात्मक गद्य।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक गद्य पाठ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - नेहा ने `सेवा` नामक संस्था बनाई है। उस के सदस्य गाँव की स्वच्छता करते हैं। गाँव में वृक्षारोपण करते हैं और मनोरंजन करके ज्ञान की बातें जतातें हैं। इसी कारण गाँव में हरियाली के साथ खुशहाली आयी है।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को स्वच्छता,वृक्षारोपण तथा मनोरंजन का महत्त्व समझाना और स्त्रीलिंग एकवचन व बहुवचन की जानकारी देना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त शब्द मरुस्थल,वृक्षारोपण।

वाक्य प्रकार - सरल व संक्षिप्त वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य।

कारक - कर्ता कारक,करण कारक,आपादान कारक,संबंध कारक,अधिकरण कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक,अल्पविराम,अवतरण चिह्न।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,अपूर्ण वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमानकाल।

० वर्तनी मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत

रूप से करते हैं । उदा.गाँव,कुड्डा-कचरा,उजाड,नृत्य,वृक्ष ।

लिखित वर्तनी - मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा.गाँव,कुड्डा-कचरा ।

नये संबोध - संस्था,योजना,समिति,मनोरंजन ।

नये शब्द - वृक्षारोपण,प्रतियोगिता,अनुरोध,धूरा,निर्दयता,ध्येय,खुशहाली ।

मुहावरे - व्रत लेना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.नृत्य,वृक्ष,प्रतिदिन,कूड्डा-कचरा ।

भाषण - संभाषण - उदा.कूड्डा-कचरा,प्रतिदिन,नृत्य,वृक्ष ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों को -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और पाठ में आए विरामचिह्नों पर ध्यान देकर वाचन करना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.छात्र ,कूड्डा,प्रतिदिन,गाँव ये शब्द कुड्डा,प्रतिदीन,गाव इस रूप में लिखते है । अध्यापकोंने छात्रों को सही रूप समझाकर नये शब्द लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को स्त्रीलिंग एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखने के लिए कहा जा सकता है । साथ ही अध्यापकों ने छात्रों के गुट बनवाकर ऐसे ही कृति-कार्यक्रमों का वृत्तान्त कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को स्त्रीलिंग एकवचन व बहुवचन और शब्दों के स्त्रीलिंग और पुल्लिंग रूप की जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक - ४(गद्य) । शीर्षक - कबीर ।
युग - मध्यकाल । विधा - व्यक्तिचित्र ।
संरचना में स्थान - व्यक्तिचित्र ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - नीरू और नीमा को संतान न थी । उन्हें एक तालाब के किनारे बच्चा मिलता है । जिसका नाम कबीर रखा जाता है । कबीर ने बड़े होकर समानता का संदेश दिया ।

पाठ का उद्देश्य - एकता और समानता की भावना को बढ़ाना और छात्रों को सामान्य वर्तमान काल की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - ` ढ ` वर्ण से बना शब्द - पढ़ा, बढ़ा, बढ़ना ।

वाक्य प्रकार - सरल व विधि वाक्य ।

कारक - कर्ता कारक, संबंध कारक, अपादान कारक, संप्रदान कारक, करण कारक, अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, छोटा निर्देशक, अवतरण चिह्न ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, पुर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण छात्र गलत रूप से करते हैं । उदा. मूख, हाथ, पढा, ज्ञान ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. मूख, हाथ, विद्वान ।

नये संबोध - व्याकुल, विद्वान ।

नये शब्द - जुलाहा, विश्राम, बुनना, इन्सान ।

मुहावरे - फूला न समाना, हृदय को छू लेना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. मूख, पढा, हृदय, ज्ञान ।

भाषण - संभाषण - उदा. मूख, इन्सान, ज्ञान, हाथ । अध्यापकों ने ` ज्ञ ` वर्ण से बने अन्य शब्दों का छात्रों की ओर से मानक उच्चारण करवा के लेना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा एवं विराम चिह्नों पर ध्यान देना चाहिए । वाचन करते समय छात्रों को समझाना चाहिए कि, हिन्दी में ' ज्ञ ' वर्ण का उच्चारण ' ग्य ' के रूप में होता है ।

लेखन- छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलत रूप से लिखते है । उदा.भूख - भूक,विद्वान -विद्वान, द्वारा - द्वारा,ज्ञान- ग्यान । अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का सही रूप बताकर छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को प्रस्तुत पाठ द्वारा ' ज्ञ ' वर्ण के उच्चारण की जानकारी मिलती है और छात्र सामान्य वर्तमान कारक को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक ५ (गद्य) । शीर्षक - कुत्ते की सूझ-बूझ ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - लेखक ने एक कुत्ता पाला है । एक दिन घर के सभी लोग बाहर गए तब चोरी हो गयी । लेकिन कुत्ते की सूझ-बूझ के कारण चोर पकड़े गये ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों के मन में भूतदया की भावना निर्माण करना और सामान्य भूतकाल की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - बार-बार, हाँपते-हाँपते ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,संक्षिप्त वाक्य,विधि वाक्य ।

कारक - संबंध कारक,कर्ता कारक,अधिकरण कारक,कर्म कारक,करण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,छोटा निर्देशक,आश्चर्य चिह्न,अवतरण चिह्न ।

काल विचार - सामान्य भूतकाल,वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.पुलिस,चुपके,पक्डना,गहना ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.पुलिस,पिल्ला,कुत्ता,मौंकना ।

नये संबोध - सूझ-बूझ,चोरी ।

नये शब्द - हंगामा,ताला,थानेदार,बिखरना,गहना,हरामखोर ।

मुहावरे - नौ दो ग्यारह होना,पीठ थपथपाना ।

० मौखिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा.पुलिस,पिल्ला,चुपके,पक्डना,गहना ।

भाषण संभाषण - उदा. पक्डना,गहना,चुपके,पिल्ला,पुलिस ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को आश्चर्य चिह्न और अवतरण चिह्न से युक्त परिच्छेदों को पढने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी अन्य कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलत रूप से लिखते हैं । उदा.कुत्ता,कुत्रा,पिल्ला-पील्ला,पुलिस-पोलिस,मौंकना - भूकने,गाडी-गाडी,पक्डा-पक्डा । अध्यापकों ने नये शब्दों को छात्रों की ओर से सही रूप में लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को सामान्य भूतकाल के वाक्य तैयार करने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में भूतदया की भावना निर्माण होती है और छात्र सामान्य भूतकाल को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - ६ (गद्य) । शीर्षक - बंद हवा ।
युग - प्राचीन युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कहानी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - राजा कृष्णदेवराय के दरबार में एक दिन महात्मा आए । उन्हे वहाँ बंद हवा की गंध आयी । महात्मा ने राजा से कहा बाहर की हवा को बेरोक-टोक आने जाने दो । इस वाक्य का अर्थ तेलीराम ने राजा को बताया कि राजा ने राज्य में जाना चाहिए और प्रजा को दरबार में आने की अनुमति देनी चाहिए । तब राजा की परेशानी दूर हो गयी ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि राजा का प्रजा के प्रति क्या कर्तव्य है । साथ ही छात्रों को भविष्य काल की जानकारी देना ।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - विरुध्द अर्थ के शब्द - सुख-दुख, आती - जाती ।
वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।
कारक - संबंध कारक, करण कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, आपादान कारक, कर्ता कारक , कर्म कारक ।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्पविराम, छोटा निर्देशक, अवतरण चिह्न, प्रश्न चिह्न ।
काल विचार - भविष्य काल, सामान्य भूतकाल, सामान्य वर्तमानकाल ।
वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. राजा, फड़कना, खिड़कियाँ, पूछा ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. फड़कना, मुसकराना, पूछा ।

नये संबोध - अगवनी ।

नये शब्द - अचरज, परेशानी, नथुने, बेरोक-टोक ।

मुहावरे - अगवानी करना, अनुमति देना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. राजा, पूछा, जटाएँ, कृष्णदेव, खिड़कियाँ ।

भाषण संभाषण - उदा. पूछा, चिंताएँ, खिड़कियाँ ।

वाचन - वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और परिच्छेद में आए विराम चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए । छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को भविष्य काल के वाक्य पढ़ने के लिए कहना चाहिए । साथ ही छात्रों को ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढ़ने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय गलतियाँ करते हैं । उदा. फड़कना - फडकना, मुसकराना - मुसुकुराना । अध्यापकों ने नये शब्दों को सही रूप में छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को ` ड़ ` और ` ढ़ ` वर्णों से बने शब्द कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को कुछ वाक्य देकर भविष्य काल में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र भविष्य काल के क्रियारूप को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - ७ (पद्य) । शीर्षक - मेहनत ही भगवान है ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।

संरचना में स्थान - संदेशपरक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - कवि के मतानुसार भारत के किसान खेत में मेहनत करते हैं और भारत के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रहे हैं और सैनिक भारतीय सीमा की रक्षा कर रहे हैं ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों को मेहनत का महत्त्व समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - तोड़-फोड़, बढा ।

कारक - अपादान कारक, संबंध कारक, करण कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम ।

काल विचार - वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों उच्चरण गलत रूप से करते हैं । उदा. बढना, ज्ञान, तोड-फोड, निर्माण ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. बढ़ना, तोड़-फोड़, निर्माण ।

नये संबोध - मेहनत, अभियान ।

नये शब्द - निखरना, अनुशासन, बलिहान, नूतन ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. तोड़-फोड़, बढा, चारों, निर्माण ।

भाषण - संभाषण - उदा. निर्माण, बढना, तोड़-फोड़। अध्यापकों ने भाषण-संभाषण प्रभावपूर्ण चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए ।

मेहनत का महत्त्व रखने वाली ऐसी ही अन्य कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।

कविता का वाचन करते समय आरोह-अवरोह पर ध्यान देना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्द लिखते समय गलतियाँ करते हैं।

उदा. हाथ-हात, बढ़ना-बढना, तोड़-फोड़ - तोड-फोड। अध्यापकों ने ये शब्द छात्रों की ओर से उचित रूप में लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को भारतीय किसान विषय पर दस पंक्तियाँ कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र मेहनत का महत्व समझाते हैं।

पाठ क्रमांक - ८ (गद्य)। शीर्षक - शिवाजी की प्रतिज्ञा।

युग - मध्यकाल (रीतिकाल)। विधा - एकांकी।

संरचना में स्थान - देशप्रेम परक एकांकी।

पाठ का संक्षिप्त आशय - बचपन में शिवाजी ने महाबल को जमीन पर पटक दिया। गुरू से शिवाजी ने क्षमा माँगी। गुरू ने शिवाजी से देश सेवा की प्रतिज्ञा ली।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों के मन में देशप्रेम जागृत करना और इतिहास की जानकारी देना और पुरूषवाचक सर्वनामों की जानकारी देना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टिसे - संधियुक्त शब्द - पाठ शाला, देशहित, महाबल।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, विधि वाक्य।

कारक - करण कारक, कर्ता कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक, संप्रदान कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्न चिह्न।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल, अपूर्ण भूतकाल।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण नहीं करते । उदा.प्रतिज्ञा,धर्मेंड,पढ़ा,न्यौछावर,कमजोर ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा.बढ़ा,गोपाल,नहीं ।
नये संबोध - प्रतिज्ञा, अपराध ,कमजोर ।
नये शब्द - सहमना,पटकना,न्योछावर,रक्षा ।
मुहावरे - भला-बुरा कहना,जान न्योछावर करना,रो पड़ना ।

० भाषिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा.धर्मेंड,न्योछावर,प्रतिज्ञा,कमजोर ।
भाषण - संभाषण - प्रतिज्ञा,कमजोर,धर्मेंड,न्योछावर । छात्रों को पात्र बनाकर प्रस्तुत एकांकी का भाषण-संभाषण किया जा सकता है ।
वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का संवादात्मक शैली में वाचन करना चाहिए । छात्रों की तरफ से पाठ का संवादात्मक शैली में सस्वर वाचन कर के लेना चाहिए । अध्यापकों ने पाठ का वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नों पर ध्यान देना चाहिए ।
लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते है । उदा.धर्मेंड - धर्मेंड,बड़े-बड़े,गोपाल-गोपाळ,अध्यापकों ने प्रस्तुत शब्दों को छात्रों द्वारा लिखकर लेना चाहिए । अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए पुरूषवाचक सर्वनामों को चुनकर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठक्रम के उददेश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत होती है और छात्र पुरूषवाचक सर्वनामों को समझते हैं ।

पाठ क्रमांक - ९ (गद्य) । शीर्षक - सच्ची सहायता

युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - उपदेशपरख कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - वल्लभ ने एक भिखमंगे को घर बुलाया । उसे वल्लभ कपड़े देना चाहता है । लेकिन वल्लभ के पिता ने उसे कपड़े देने के बजाय चरखा और रूई दे दी । अब भिखारी सूत कातने लगा और उसे पैसे मिलने लगे ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों के मन में दीन-दुखियों को मदद करने की भावना जागृत करना और सर्वनामों के साथ आए आज्ञार्थक रूपों को समझाना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - ' ड़ ' वर्ण से बने शब्द - बड़ा, पेड़, जाड़ा ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक, आपादान कारक, कर्ता कारक, कर्म कारक, अधिकरण कारक, संप्रदान कारक, करण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अवतरण चिह्न, प्रश्न चिह्न, प्रश्न चिह्न ।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल, सामान्य वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, अपूर्ण वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा. जाड़ा, पेड़, काँपना, चरखा, रहना ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. दिन, जाड़ा, काँपना, रहना ।

नये संबोध - सहायता, प्यार ।

नये शब्द - जाड़ा, सरदी, टहलना, ठिठुरना, चरखा, रूई, चरखा ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.जाड़ा,पेड़,काँपना,भिखमंगा,चरखा ।

भाषण संभाषण - उदा.चरखा,जाड़ा,काँपना । अध्यापकोंका भाषण संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - पाठ का आशय समझाने के लिए छात्रों को मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को सर्वनाम के साथ आए आज्ञार्थक रूपों से बने वाक्यों को पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.जाड़ा-जाड़ा,काँपना-काँपना । अध्यापकों ने छात्रों की ओर से शब्दों के सही रूप समझाकर लिखकर लेना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को प्रस्तुत पाठ का परिच्छेद लिखने के लिए कहना चाहिए और शुद्धलेखन देखना चाहिए ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र सर्वनामों के आज्ञार्थक रूपों को समझाते हैं और छात्रों के मन में दूसरों को मदद करने की भावना निर्माण होती है ।

पाठ क्रमांक १० (गद्य) । शीर्षक - गौरैया: मेरी सहेली ।
युग - आधुनिक युग । विधा - रेखाचित्र ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक रेखाचित्र ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - बेबी के कमरे में गौरैया घोंसला बनाती है । इस कार्य के लिए बेबी का विरोध था । यह संघर्ष कई दिन तक चलता रहा । अंत में बेबी हार गयी । अब गौरैया बेबी की सहेली बन गयी है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि मनुष्य ने जीवन में हिम्मत नहीं छोडनी चाहिए । साहस जुटाकर मुकाबला करने वाले को कोई हारा नहीं सकता ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से -द्विरुक्तिवाले शब्द - शुरू-शुरू, धीरे - धीरे, ` ड़ ` वर्ण के शब्द लड़ाई ,उड़ना,छेड़ना ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - आपादान कारक,अधिकरण कारक,कर्ता कारक,करण कारक,संबंध कारक, कर्म कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अवतरण चिह्न,प्रश्न चिह्न,आश्चर्य चिह्न,अल्प विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - अपूर्ण भूतकाल,सामान्य भूतकाल,अपूर्ण वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.बिगड़ती,लड़ाई,जबरदस्त,हँसना,धत्,छेड़ना ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.लड़ाई,बिगड़ना,हँसना,धत्,छेड़ना,कीमत ।

नये संबोध - शरारत ,उपदेश ।

नये शब्द - घोंसला,हिम्मत,छकाना,टोंकना,छेड़ना,कमजोर,तिनका ।

मुहावरे - गुजर जाना,पारा चढना,खिल-खिला कर हँसना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा.बिगड़ना,हँसना,छेड़ना,कीमत,धत् ।

भाषण - संभाषण - उदा.लड़ाई,थोड़े,धत्,हँसना,समझौता,फुर्र ।

अध्यापकों ने ऐसे शब्दों से बने वाक्यों को छात्रों को पढने के लिए कहना चाहिए ।

वाचन - भाषा सीखते समय वाचन महत्वपूर्ण है । वाचन करते समय शब्दों की -हस्व व दीर्घ मात्रा और परिच्छेद में आए विराम चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए । छात्रों को पाठ समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को गलत रूप से लिखते हैं। उदा.

बिगड़ना - बिगडना, छेड़ना - छेडना, धत्-धत। अध्यापकों ने शब्दों का शुद्ध रूप समझाकर छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को कुछ विस्मयादिबोधक शब्द देकर वाक्य में प्रयोग करने के लिए कहना चाहिए।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझते हैं कि हिम्मत जुटाकर मुकाबला करने वाला कभी हारता नहीं।

पाठ क्रमांक ११ (गद्य) | शीर्षक - महात्मा फुले।

युग - आधुनिक युग। विधा - संस्मरण।

संरचना में स्थान - संस्मरण।

पाठ का संक्षिप्त आशय - महात्मा फुले समाज सुधारक थे। शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन जातिय भेदभाव दूर करने की दृष्टि से उन्होंने कोशिश की। लड़कों और लड़कियों को उन्होंने शिक्षा दी। उनके मन में दलितों के प्रति सहानुभूती थी। उन्होंने दीन-दुखियों की सेवा की।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों के मन में दलित एवं दीन-दुखियों के प्रति सेवा-भाव की भावना जागृत करना और गुणवाचक व संख्यावाचक विशेषणों की जानकारी देना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त शब्द - सत्यशोधक, जन जागृति, महात्मा।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रधान वाक्य व गौण वाक्य।

कारक - संबंध कारक, कर्ता कारक, अधिकरण कारक, संप्रदान कारक, आपादान कारक, कर्म कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, अवतरण चिह्न।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल,सामान्य भूतकाल,अपूर्ण भूतकाल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.सातवीं,निश्चय,मील,जन जागृति,मृत्यु ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.बुद्धिमान,सातवीं,हैाज,दुपट्टा,पट्टी ।
नये संबोध - सुधारक,जनजागृति ।

नये शब्द - परिवर्तन,मरसक,अखरना,समता,बंधुता,दलित ,हैाज,धोती ।

मुहावरे - लालन पालन करना,कोशिश करना,ख्याल रखना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.सातवीं,ख्याल,बुद्धिमान, निश्चय,जागृति,मृत्यु ।
भाषण संभाषण - उदा.दलित,धूप,घंटा,स्थिति,सातवीं,सहानुभूति ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और परिच्छेद,वाक्य में आए विराम चिह्नों पर ध्यान देकर उसके अनुसार वाचन करना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को महान समाज सुधारकों से संबंधित ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को गुणवाचक व संख्यावाचक विशेषणों से बने वाक्यों को पढने के लिए करना चाहिए ।
लेखन - उदा.हक्कीस,इक्कीस,बुद्धिमान - बुध्दीमान,पट्टी-पट्टी,दुपट्टा-दुपट्टा । अध्यापकों ने छात्रों की ओर से उपर्युक्त नये शब्दों को सही रूप में लिखकर लेना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को कुछ वाक्य देकर गुणवाचक एवं संख्यावाचक विशेषणों को चुनकर लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में दीन-दुखियों के प्रति सेवाभाव की वृत्ति निर्माण होती है और छात्र गुणवाचक व संख्यावाचक विशेषणों को समझते हैं ।

पाठ क्रमांक - १२ (गद्य) । शीर्षक - साहसी बच्चे ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।

युग - आधुनिक युग ।

संरचना में स्थान - साहसी कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - एक लड़की को एक पागल कुत्ता काटने के लिए आया । उस के भाई ने अपनी बहन की रक्षा की । एक बालिका के मकान में आग लग गई तब बालिका ने साहस दिखाते हुए अपने भाई-बहन को बचाया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्र समझाते है कि संकटों के समय साहस दिखाकर संकटों का मुकाबला करना चाहिए और छात्रों को स्त्रीलिंग एकवचन व स्त्रीलिंग बहुवचन को समझाना ।

व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संयुक्त शब्द - कुत्ता, चिल्लाना, झापट्टा ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, सरल वाक्य, संक्षिप्त वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - कर्ता कारक, कर्म कारक, संबंध कारक, संप्रदान कारक, अधिकरण कारक, आपादन कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्न चिह्न, छोटा निर्देशक, अवतरण चिह्न, आश्चर्य चिह्न ।

काल विचार - अपूर्ण भूतकाल, अपूर्ण वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, पूर्ण भूतकाल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. बहन, दौड़कर, दाँत ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. बहन, झापट्टा, दौड़ना, दाँत, छोड़ना ।

नये संबोध - साहस, पागल ।

नये शब्द - झापट्टा, धाव, पालन-पोषण, लपटें, गोद, बेहोश, लोकना ।

मुहावरे - धीरज बँधाना, झपट्टा मारना ।

० मार्मिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. बहन, हाँ, दाँत, बचाना ।

भाषण - संभाषण - उदा. बहन, हाँ, बचाना, दाँत ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को स्त्रीलिंग एक वचन व बहुवचन से बने वाक्य पढने के लिए कहना चाहिए । अध्यापक छात्रों को ऐसी ही अन्य साहसी कहानियाँ पढने के लिए कह सकते हैं ।
लेखन - उदा. बहन-बेहन, या बहीन, दौड़-दौड, दाँत-दात, हाँ-हा । अध्यापकों ने उपर्युक्त नये शब्दों का सही रूप बताकर छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को कुछ वाक्य देकर उन में स्त्रीलिंग एकवचन व बहुवचन के योग्य रूप लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में साहसी वृत्ति निर्माण होती है और छात्र स्त्रीलिंग एकवचन व बहुवचन को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १३ (पद्य) । शीर्षक - बहता झरना ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - संदेशपरक कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - चट्टानों को काटते हुए झरना आगे बढ रहा है । वह किसी से डरता नहीं, पेड-पौधो को, मुसाफिरों को सुखी करके आगे बढ रहा है । झरना सदा दूसरों के दुख दूर कर रहा है ।
कविता का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि मनुष्य ने अपना जीवन गतीशील रखना चाहिए और जीवन भर दूसरों को सुख देना चाहिए । साथ ही छात्रों के मन में प्रकृती प्रेम जागृत करना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - दृविरुक्तिवाले शब्द - कल-कल, मीठे-मीठे ।

कारक - संबंध कारक,अधिकरण कारक,करण कारक,कर्ता कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - वर्तमान काल ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.बहना,चलना,राजा ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा.बहना,चट्टान,राजा ।

नये संबोध - प्यास,स्वभाव ।

नये शब्द - मुसाफिर,हरषाना,झरना, कल-कल ।

मुहावरे - मन हर लेना,काट गिराना,राह बनाना,प्यास बुझाना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.बहना,चट्टान,राजा ।

भाषण - संभाषण -उदा.राजा,चलना,बहना ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही प्रकृतीपरख कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को गलत रूप से लिखते हैं । उदा.बहना - बेहना,चट्टान - चट्टान,राजा - राज्या । अध्यापकों ने नये शब्दों को शुद्ध रूप से छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में प्रकृती प्रेम जागृत होता है और छात्र मुहावरों के वाक्य में प्रयोग को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १४ (गद्य) । शीर्षक - दीवाली ।

युग - आधुनिक युग । विधा - वर्णनात्मक गद्य ।

संरचना में स्थान - वर्णनात्मक पाठ ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - दीवाली पास आई है,लोग सफाई,रँगाई,कर रहे हैं । चारो ओर सजावट,चमचमाहट है । गाँव में नगर में आज प्रसन्नता का वातावरण छाया है । सभी के मन में खुशी छाई है । लोग लक्ष्मीपूजा कर रहे हैं । घर-घर दीये जल रहे हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को भारतीय त्यौहारों की जानकारी देना और अपूर्ण वर्तमान काल को समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - गाँव-गाँव, नगर-नगर, मन - मन ।

वाक्य प्रकार - संक्षिप्त वाक्य,सरल वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक,आपादान कारक,अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - अपूर्ण वर्तमान काल,सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.रँगाई,चौरा,चमचमाहट,अँधेरा,पाँत ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.दीवाली,तुलसी,आँगन,अँधेरा ।

नये संबोध - चकाचौंध ,सफाई ।

नये शब्द - समेटना,चमचमाहट,चौरा,उछाह,रँगाई,लिपाई,पुताई,

मुहावरे - ठठाकर हँसना,प्रसन्न होना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - ` ड़ ` वर्ण से बने शब्द - कंकड़, पकड़ना, पेड़, सड़ी, अँड़े ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, संक्षिप्त वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य ।

कारक - संबंध कारक, कर्ता कारक, अधिकरण कारक, अपादान कारक, संप्रदान कारक, कर्म कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, छोटा निर्देशक, प्रश्न चिह्न, आश्चर्य चिह्न, अवतरण चिह्न ।

काल विचार - अपूर्ण भूतकाल, अपूर्ण वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुतपाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. आँगन, कंकड़, माँ, घोड़ा, मदद, पेड़, सड़ी, अँड़े ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. कँकड़, घोड़ा, पेड़, अँड़े, मदद, गिद्ध ।

नये संबोध - सड़ी-गली, पर्यावरण, लाभदायक ।

नये शब्द - कंकड़, मैंस, चूहा, मेढ, बदबू, मुर्गी, बत्तख, गिद्ध ।

मुहावरे - सवारी करना, प्यार करना, लाभदायक होना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. आँगन, माँ, कंकड़, मेढ, अँडे, मदद ।

भाषण - संभाषण - उदा. आँगन, माँ, मदद, और ` ड़ ` वर्ण से बने शब्द ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए । छात्रों को अपूर्ण भूतकाल के वाक्य पढने के लिए कहना चाहिए ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.रंगाई,चौरा,चमकना,गाँव, जगमगाहट,चकाचौंध ।

भाषण - संभाषण - उदा.रंगाई,गाँव,चमकना,जगमगाहट ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए , वाचन करते समय होनेवाली गलतियों को सुधारना चाहिए । पाठ का आशय समझने के लिए छात्रों को मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । साथ ही छात्रों को अपूर्ण वर्तमान काल के क्रिया रूपों से बने वाक्यों का वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - लेखन की दृष्टि से तथा शब्द भंडार बढाने की दृष्टि से प्रस्तुत कविता में नये शब्द आए है,जो छात्र गलत रूप से लिखते हैं । अध्यापकों ने नये शब्दों को छात्रों की ओरसे लिखकर लेना चाहिए । उदा.तुलसी-तुळसी,दीवाली-दीवाळी, । छात्रों को अपूर्ण वर्तमान काल के क्रिया रूपों का वाक्य में प्रयोग करके वाक्य पूर्ण करने के लिए कहना चाहिए । साथ ही दीवाली विषय पर दस पंक्तियाँ कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

o पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को भारतीय त्योहारों की और अपूर्ण वर्तमान काल की जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक - १५ (गद्य) । शीर्षक - उपयोगी पशु-पक्षी ।
युग - आधुनिक युग । विधा - वर्णनात्मक गद्य ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक गद्य पाठ ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - सुरेश आँगन में आए पंछीयों को कंकड मार रहा है । तब माँ उसे कौआ,चील,गिद्ध,कबूतर,मुर्गी,बत्तख,आदि पक्षियों की और गाय, भैंस ,बैल,घोडा,कुत्ता,बिल्ली ,भेंड आदि पशुओं की उपयोगिता समझाती है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को पशु-पक्षियों की उपयोगिता को समझाना और अपूर्ण भूतकाल की जानकारी देना ।

लेखन - उदा. कंकड़-कंकड़, मेढ़-मेड, घोड़ा-घोडा, मदद-मदत, गिद्ध - गिध्द ।
अध्यापकों ने छात्रों की ओर से उपर्युक्त नये शब्दों को सही रूप में लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को कुछ वाक्य देकर उन में से अपूर्ण भूतकाल के वाक्य छाँटकर लिखने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ' उपयोगी जानवर' या ' उपयोगी पक्षी ' विषय देकर दस वाक्य कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

o पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र पशु-पक्षियों की उपयोगिता और अपूर्ण भूतकाल को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १६ (गद्य) । शीर्षक - तोडो नहीं जोडो ।
युग - प्राचिन युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेश परख कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - अंगुलिमाल नामक डाकू लागों को मारता था । एक दिन भगवान बुद्ध से उस की मुलाकात हो गई । बुद्ध ने उसे पेड से चार पत्ते तोड लाने के लिए कहा और फिर जोडने के लिए कहा । बुद्ध ने डाकू को उपदेश दिया तोडो नहीं जोडो । अत: डाकू बुद्ध की शरण में आ गया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि, मनुष्य ने मनुष्य के प्रति सहृदयता की भावना रखनी चाहिए और व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की जानकारी देना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - तोडो, जोडो, संधियुक्त शब्द - अंगुलिमाला ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक, करण कारक, आपादान कारक, कर्ता कारक, कर्म कारक, अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्पविराम, अवतरण चिह्न, प्रश्न चिह्न ।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, सामान्य भूतकाल, अपूर्ण वर्तमान काल।

वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते है । उदा.तोड़ो,जोड़ो,चार,जहाँ ।

लिखित वर्तनी- छात्र मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.तोड़ो,जोड़ो,बुद्ध ।

नये संबोध - डाकू,उपदेश,स्नेह ।

नये शब्द - उँगलियाँ,इरादा,पत्ते,मुश्किल,बोध,झुँझलाना ।

मुहावरे - बाएँ हाथ का खेल,जान लेना,प्राण सूखना,पता चलना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - जब अध्यापक शब्दों का मानक उच्चारण करते है तब छात्र सुनते है । और शब्दों का सही आकलन छात्रों को होता है । इस लिए प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का अध्यापकों ने मानक उच्चारण करना चाहिए । उदा.तोड़ो,जोड़ो,चार,जहाँ ।

भाषण - संभाषण - उदा.जहाँ,चार,जोड़ो,तोड़ना ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को बुद्ध की कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए और व्यक्तिवाचक संज्ञा से बने वाक्यों को पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - अध्यापकों ने छात्रों की गलतियाँ सुधारना चाहिए और नये शब्द बही में लिखकर लेना चाहिए । उदा.तोड़ो - तोडो,जोड़ो-जोडो,बुद्ध-बुध्द इन गलतियों में सुधार करना चाहिए । अध्यापकों ने कुछ वाक्य देकर,वाक्य में आयी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ छाँटकर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों मे सहृदयता की भावना जागृत होती है और छात्र व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १७ (गद्य) । शीर्षक - शोर-ही-शोर

युग - आधुनिक युग । विधा - एकांकी ।

संरचना में स्थान - समस्या प्रधान एकांकी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - सोहन और मालती बाजार में गए हैं । बाजार में शोर ही शोर है और इसी कारण वे थक गए हैं । जब वे पाठशाला में आते हैं तब शिक्षक ध्वनि प्रदूषण व हवा प्रदूषण रोकने के उपाय बताते हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि ध्वनि प्रदूषण व हवा प्रदूषण को कैसे रोका जाय । साथ ही छात्रों को प्रश्नवाचक सर्वनामों की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - भीड़,थोड़ी,सड़क,। संधियुक्त शब्द - सिरदर्द,स्नेह-सम्मेलन ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य,आज्ञार्थक वाक्य,विस्मयादि बोधक वाक्य,प्रधान - वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - संबोधन कारक,अधिकरण कारक,संप्रदान कारक,कर्म कारक,करण कारक, कर्ता कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,आश्चर्य चिह्न,अल्प विराम,प्रश्न चिह्न,छोटा - निर्देशक,लोप चिह्न,कोष्ठक ।

काल विचार - अपूर्ण वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल,सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण भूतकाल,सामान्य भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा.महसूस,आश्चर्य,सडक,जरूरत,बाजार ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.महसूस,कुर्सी,रेडियो ।

नये संबोध - शोर,बाजार,प्रदूषण ।

नये शब्द - दर्द, थकावट, झूठ, स्नेह सम्मेलन, जुलूस, नारा, सही, सिलसिला, कोलाहल ।

मुहावरे - सफेद झूठ बोलना, कान फटना, महसूस होना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. महसूस, आश्चर्य, सड़क, जरूरत, बाजार, चुप ।

भाषण - संभाषण - उदा. महसूस, चुप, बाजार, सड़क । छात्रों को पाठ में आए पात्र बनाकर छात्रों की ओर से पाठ का संभाषण लिया जा सकता है ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत एकांकी का भावपूर्ण एवं संवादात्मक शैली में वाचन करना चाहिए । साथ ही छात्रों की ओर से संवादात्मक शैली में वाचन करके लेना चाहिए । छात्रों को प्रश्नार्थक सर्वनामों से बने वाक्य पढने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही अन्य समस्या प्रधान एकांकी पढने के लिए कहा जा सकता है ।

लेखन - सड़क;सडक, महसूस - मेहसूस, कुर्सी-कुर्चि । अध्यापकों ने शब्दों का सही रूप बताकर छात्रों की ओर से शब्दों को लिखकर लेना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को वाक्य में आए प्रश्नार्थक सर्वनाम छाँट कर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र हवा और ध्वनि प्रदूषण को कैसे रोका जाय और प्रश्नवाचक सर्वनामों को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १८ (पद्य) । शीर्षक - झिल-मिल तारे ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - आकाश में रात के समय तारे झिल-मिल रहे हैं । मानो आकाश में दीपों का त्योहार है । चंदा का निरमल शीतल प्रकाश माँ के प्यार की तरह है । तारे और चंदा अपनी हँसी बिखेर रहे हैं । मानो वे बच्चो को पुकार रहे हैं ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों को शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा या चंद्रबिंदी या अनुस्वार के उच्चारण को समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - प्यारे-प्यारे, खिल-मिल ।

कारक - अधिकरण कारक, संबंध कारक, संप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. चमक, चाँद, उचक्कर, चंदा, गंगाजल ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. चाँद, चंदा ।

नये संबोध - पावन ।
नये शब्द - सिझा-मिल, अंबर, निरमल, उचकना, हेरना, छत, बिखेरना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. झिल-मिल, चाँद, चंदा, अंबर ।

भाषण-संभाषण - छात्रों को समझाना चाहिए कि ` चंद्रबिंदी ` का उच्चारण अनुनासिक होता है और अनुस्वार का उच्चारण आधे ` न ` के रूप में होता है । उदा. चाँद, चंदा, गंगाजल ।
वाचन - अध्यापकों ने कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा, आरोह - अवरोह व विराम चिह्नों पर ध्यान देकर वाचन करना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही वर्णनात्मक कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्द शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलत रूप से लिखते हैं । उदा.चाँद-चांद,नीला-नीळा,चंदा-चन्दा । अध्यापकों ने शब्दों का सही रूप समझाकर उन्हें छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र शब्दों को -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और अनुस्वार व चंद्रबिंदी के उच्चारण को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १९ (गद्य) । शीर्षक - सुख की खोज ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - एक धनिक महात्मा के पास मन की सुख-शांति खोजने के लिए आए हैं । महात्मा ने कमंडल का उदाहरण देकर कहा,मन की सुख-शांति बाहर नहीं मन की पवित्रता से मिलती है ।

सुकरात और उनके शिष्य वस्तुओं के दुकान में गए ।वहाँ वस्तुएँ सुंदर है मगर सुकरात ने खरीदी नहीं क्यों कि बिना जरूरत की वस्तु खरीदना सुकरात अच्छा नहीं समझाते ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि सुख और शांति मन की पवित्रता से मिलती है और जो सुंदर होता है वह उपयोगी होता ही है ऐसा नहीं । साथ ही छात्रों को विराम चिह्नों के उचित प्रयोग की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार कीदृष्टि से - समास युक्त शब्द - अपार,शानदार ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - आपादान कारक,कर्म कारक,अधिकरण कारक,कर्ता कारक,संबंध कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम,अवतरण चिह्न,पूर्ण विराम,प्रश्न चिह्न ।

काल विचार - अपूर्ण वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का गलत रूप से उच्चारण करते हैं । उदा. ठहरना, खोज, चीज, जरूरत ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. ठहरना, रात । और छात्र वाक्य में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग नहीं करते हैं ।

नये संबोध - धनिक, खोज, संपत्ति, शानदार, कुटी ।

नये शब्द - अपार, कमंडल, सुकरात, खरीदना ।

मुहावरे - राह बताना, ठहर जाना, साथ चलना, प्रयत्न करना, सजाकर रखना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. ठहरना, जरूरत, खोज, चीज ।

भाषण-संभाषण - उदा. ठहरना, चीज, खोज ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों की ओर से विरामचिह्नों के अनुरूप सस्वर वाचन लेना चाहिए । छात्र पाठ का आशय समझे इस लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही अन्य उपदेशपरक कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा. ठहरना - ठेहरना, प्रशंसा-प्रसंशा, शांति-शाँती । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप समझाकर, छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को परिच्छेद देकर उस में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि सुख और शांति मन की पवित्रता से मिलती है और जो सुंदर होता है वह उपयोगी होता ही है ऐसा नहीं । साथ ही छात्र विराम चिह्नों का उचित प्रयोग समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - २० (गद्य) । शीर्षक - नानीजी का गाँव ।

युग - आधुनिक युग । विधा - व्याकरण(पत्र लेखन) ।

संरचना में स्थान - पत्र लेखन ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - मोहन पत्र द्वारा अपने नानी के गाँव की जानकारी दे रहा है। वह खेत,और गुड कैसे तैयार किया जाता है और इस का वर्णन करता है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को हिन्दी पत्र लेखन की जानकारी देना और अपूर्ण व सामान्य वर्तमान काल को समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - कड़ाह,गुड,गाठा,छोटी-छोटी, अपने-अपने,बड़े-बड़े,थोडा-थोडा ।

वाक्य प्रकार - संक्षिप्त व सरल वाक्य,प्रधान व गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक ,अधिकरण कारक,करण कारक,अपादान कारक,कर्ता कारक, संप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल,अपूर्ण वर्तमान काल, भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.गाजर,पल्ले,गुड़,गाढा,उखाड़ना ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.पल्ले,गोभी,मूली,गुड़,गाढा ।

नये संबोध - सब्जि, कोल्हू ।

नये शब्द - गेहूँ,मूली,पालक,गोभी,टमाटर,बैंगन,उखाड़ना,टोकरी,गुड,कड़ाह, गन्ना ।

मुहावरे - प्रसन्न होना,अच्छा लगना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.गुड़,पहले,गाजर,गाढा ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण अध्यापकों ने छात्रों की ओर से करवा के लेना चाहिए । उदा. `ड़` और `ढ़` वर्ण से बने शब्द, पहले, गाजर । अध्यापक का भाषण एवं संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय नुक्तेवाले शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । साथ ही छात्रों को अपूर्ण वर्तमान काल व सामान्य वर्तमान काल से बने वाक्यों को पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलत रूप से लिखते हैं । उदा.खेत-शेत,गुड़-गुड या गुळ,पहला - पहेला या पेहला । छात्रों को शब्दों का सही रूप समझाकर उन्हें कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को अपने मित्र के नाम कापि में पत्र लेखन करने के लिए कहना चाहिए ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र पत्र लेखन को समझाते हैं और छात्रों को अपूर्ण और सामान्य वर्तमान काल की जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक - २१ (गद्य) । शीर्षक - अश्वमेघ का घोडा ।
युग - भक्तिकाल । विधा - एकांकी ।
संरचना में स्थान - साहसपरख एकांकी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - लव व कुश आश्रम में आए घोडे को पकडते हैं । सैनिक घोडा पकडने को मना करते हैं । वे छोडते नहीं । दोनों में युद्ध आरंभ होता है । सैनिक घोडा लेकर चले जाते हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों में साहसी वृत्ति निर्माण करना और भविष्यकाल की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - राज्यसीमा, अयोध्यापति, शूरवीर, ऋणीपुत्र, वटवृक्ष ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, संक्षिप्त व सरल वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, प्रधान वाक्य व गौण वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक, कर्ता कारक, संबंध कारक, संप्रदान कारक, संबोधन कारक, करण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, आश्चर्य चिह्न, अल्प विराम, अवतरण चिह्न, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - पूर्ण वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल, भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. यज्ञ, लाँधना, वटवृक्ष, ऋणिपुत्रों, जोड़कर ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. युद्ध, जोड़कर, पकड़ना ।

नये संबोध - पवित्र, निमंत्रण, प्रार्थना, युद्ध , आश्रम, यज्ञ ।

नये शब्द - लाँधना, रट, अवसर, वटवृक्ष, तीर ।

मुहावरे - छिप जाना, लटकते रहना, रट लगाना, लौट जाना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. यज्ञ, लाँधना, वटवृक्ष, ऋणिपुत्रों, जोड़ना ।

भाषण - संभाषण - उदा. लाँधना, वटवृक्ष, जोड़ना । अध्यापकों ने छात्रों की ओर से प्रस्तुत एकांकी का नाटयीकरण करना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का संवादात्मक शैली में सस्वर वाचन करना चाहिए। अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का छात्रों की ओर से संवादात्मक शैली में सस्वर वाचन लेना चाहिए। साथ ही भविष्य काल व वर्तमान काल के वाक्य पढने के लिए कहना चाहिए। छात्रों को ऐसी ही साहसपरक एकांकी पढने कि लिए कहा जा सकता है।

लेखन - उदा. युद्ध - युध्द, जोड़ना - जोडना। अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का मानक रूप बताकर, लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को प्रस्तुत पाठ में आए भविष्य काल के वाक्य छाँटकर कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में साहसी वृत्ति निर्माण होती है और छात्रों को भविष्य काल की जानकारी होती है।

पाठ क्रमांक - २२ (गद्य) शीर्षक - बगीचा।
युग - आधुनिक युग। विधा - निबंध।
संरचना में स्थान - वर्तनात्मक निबंध।

पाठ का संक्षिप्त आशय - लेखक के घर के सामने बगीचा है, जो बहुत सुंदर है। बगीचा में झूला है, फिसलपट्टी, फौआरा है। पालत् बंदर है। इतवार को यहाँ मेला सा रहता है। बगीचे में स्वामी विवेकानंद की मूर्ति है। वाटिका का नाम ` विवेकानंद वाटिका ` है।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों के मन में प्रकृति प्रेम निर्माण करना और ` ड़ ` ` ढ़ ` वर्णों का उच्चारण समझाना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समास युक्त शब्द - फिसलपट्टी, मनमोहक, मनोरंजन। ` ड़ ` , ` ढ़ ` वर्ण के शब्द - बढ़ाना, सूँड़, बूढ़ा।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य।

कारक - सबंध कारक,अधिकरण कारक,कर्म कारक,करण कारक,आपादान कारक, सँप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक,अल्प विराम,अवतरण चिह्न ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,अपूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.बढ़ावा,सूँड़,बूढ़ा ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. सुस्वागतम्,फिसलपट्टी,सूँड़,छुट्टी,प्रसिद्ध ।

नये संबोध - ताजगी,प्रतिमा ।

नये शब्द - वाटिका,घास,झूला,हरियाली,फिसलपट्टी,फौआरा,आम,नीम, जामुन,बंदर,इतवार,सजी-सँवारी,संसार,अनोखी,पुलकित,बढ़ावा,रौनक ।

मुहावरे - फूला न समाना,मन मोह लेना,पुलकित होना,रौनक बढाना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.सूँड़,बढ़ावा,बूढ़ा ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए तब ही छात्र दूसरों के साथ बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय आरोह व अवरोह औरविराम चिह्नों पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.प्रसिद्ध-प्रसिध्द,शुद्ध-शुध्द,सूँड़-सूँड या सौंड,बढ़ावा-बढावा, फिसलपट्टी - फिसलपट्टी । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर,छात्रों की ओर मानक रूप में लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को बगीचा विषय पर दस पक्तियाँ निबंध लिखने केलिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में प्रकृति प्रेम जागृत होताहै और छात्र ` ड़ ` और ` ढ़ ` वर्णों के उच्चारण को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - २३ (पद्य) शीर्षक - वर्सत ऋतु ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - प्रकृति प्रेम परख कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - वर्सत ऋतु में मैरि गीत गा रहे हैं । कोयल का स्वर मस्ताना,है,हवा अपना नखरा दिखा रही है । वर्सत ऋतु में सभी खुश है ।
कविता का उद्देश्य - छात्रों को ऋतुओं की जानकारी देना और दीर्घ मात्रा के उच्चारण को समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - फूल-फूल, डाल-डाल,पात-पात ।
कारक - संबंध कारक,अधिकरण कारक ।
विराम चिह्न - अल्प विराम,छोटा निर्देशक,पूर्ण विराम ।
काल विचार - वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.ऋतु,महकना,चहकना ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भीगलतियाँ करते है । उदा.महकना,फूल,चहकना ।
नये संबोध - गाना,ऋतु ।
नये शब्द - पात,कोयल,मस्ताना,महकना,चहकना,इठलाना,मैरा ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. चहकना, महकना, ऋतु ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही अन्य प्रकृतिवर्णन परक कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा. चहकना - चेहकना, महकना - मेहकना । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर, लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को कुछ काव्य पंक्तियाँ देकर खाली जगह भरने के लिए कहा जा सक्ता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को ऋतुओं की जानकारी होती है और छात्र दीर्घ मात्रा में उच्चारण को समझते हैं ।

(इ) कक्षा सातवीं - श्रवण - आकलन, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन -

पद्य पाठ क्रमांक - १ (पद्य) । शीर्षक - देश हमारा ।
युग आधुनिक युग । विधा - कविता ।

संरचना में स्थान - राष्ट्रप्रेमपरक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - हमारे भारत देश में बर्फीले पर्वत, जंगल, दलदल, झील और झरने हैं । सारा देश सुजला-सुफला है । विभिन्न धर्म, जाति के, विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं । फिर भी भारत की विविधता में एकता है ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम जागृत करना और भारत की विविधता में एकता को समझाना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - ऊँचे-ऊँचे, माई - माई । संधियुक्त व समास युक्त शब्द - इकतारा, गिरजाघर, प्रणवीर, गुरुद्वार ।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारण, अपादान कारक, कर्ता कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विरा, छोटा निर्देशन, पूर्ण विराम ।

काल विचार - वर्तमान काल और भूतकाल ।

० वर्तन - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा. चाय, सुजला, सुफला, सिक्ख ।

लिखित वर्तन - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते करते हैं उदा. सिक्ख, द्वार, सिद्ध ।

नये संबोध - बागान, फल, टीला, धारा ।

नये शब्द - बंजारा, इकतारा, रेत, झील, नहर, दावा, ईसाई, गिरजाघर, गुरुद्वार, अंगारा ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.चाय,सुजलां,सुफलां,सिक्स शब्दोंका मानक उच्चारण छात्रों को समझाना चाहिए ।

भाषण - संभाषण - अब अध्यापक बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं तब छात्र सुनते हैं और दूसरों के साथ बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं । अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों की ओर से करवाके लेना चाहिए । उदा.चाय,सुजलां,सुफलां,सिक्स । अध्यापक का भाषण व संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा व विरामचिह्नों पर ध्यान देना चाहिए । वाचन में आरोह - अवरोह आवश्यक है । साथ ही प्रस्तुत कविता कंठस्थ करने के लिए करना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.सिक्स;सीस,गुरूद्वार - गुरूद्वार,सिद्ध - सिध्द । छात्रों को भारत की विविधता में एकता इस विषय पर दस पंक्तियाँ कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम जागृत होता है और छात्र भारत की विविधता में एकता को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - २ (गद्य) । शीर्षक - जादू के सिक्के ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेश परक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - मन्नो दीदी बालमंडल की संचालिका थी । वह हर महीने समापति चुनती थी । रघू ने बीमार काकी की सेवा की । काकी उसे हर रोज पाँच पैसे का सिक्का देती थी । सिक्के एक दिन खत्म हुए तो संदुकची में रघू ने सिक्के डाले । अब कभी सिक्के खत्म नहीं हुए । रघू बालमंडल का समापति बन गया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों में दुर्बलों को सहायता करने की भावना निर्माण करना और संधियुक्त व समासयुक्त शब्दों की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - विद्यालय, पैसे वाला, सभापति, सरपंच, संचालिका, जीवन भर ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य, संयुक्त वाक्य ।

कारक - संबंध कारक कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, अधिकरण कारक, आपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक, अल्प विराम, प्रश्न चिह्न, आश्चर्य चिह्न, अवतारण चिह्न ।

काल विचार - पूर्ण वर्तमान काल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, अपूर्ण वर्तमान काल भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. शहतूत, रहट, रहना, मचाना, संचालिका, चुनना, आँसू, पाँच ।

लिखित वर्तन - छात्र मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. डाक्टर, फोडे, सिक्का, बाल-मंडल ।

नये संबोध - जादू, सिक्का, संचालिका, कमजोर ।

नये शब्द - शहतूत, रहट, आलू, बोना, कोठरी, संदूकची, घुंघ, सिरहाने, संतोष ।

मुहावरे - शोर मचाना, दंग रह जाना, लाभ न होना, आँखों में आसू आना, उदास होना, प्रसन्नता छाना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा. शहतूत, रहट, मचाना, संचालिका, चुनना,

भाषण - संभाषण - उदा. शहतूत, रहट, मूँगफली, आँसू, पाँच, संचालिका, अध्यापक का भाषण - संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्र पाठ का आशय समझे इस लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही उपदेश परख कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.सिक्का - सिक्का,मैडल-मैडळ, शहतूत - शेहतूत, रहट-रेहट,पाँच-पाँच । छात्रों को शब्दों का मानक रूप समझाकर,लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को पाठ में आयी संज्ञाओं को छाँटकर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में दूर्बलों को सहायता करने की भावना निर्माण होता है,और छात्र संधियुक्त व समासयुक्त शब्दों को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक ३ (गद्य) । शीर्षक - मालिक और नौकर ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - उपदेशपरख कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - शांतिनिकेतन में रविंद्रनाथ के दप्तर में सतीश पारण नामक व्यक्ति झाडू लगाने का काम करता था । सतीश के कपडे उँचे थे और उस की इच्छा थी कि लोग उसे बाबू कहके पुकारे । सतीश ने झाडू लगाना बंद किया, तो स्वयं रविंद्रनाथ जी ने झाडू लगाया । तब सतीश अपनी गलती समझ गया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि हर काम अपनी जगह श्रेष्ठ होता है और छात्रों को मुहावरों की और संज्ञाओं की जानकारी देना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - शांति निकेतन,कार्यालय,उपनाम,कविश्रेष्ठ,स-हृदयता ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,विस्मयादिबोधक वाक्य,प्रधान वाक्य व गौण वाचन ।

कारक - संबंध कारक,अधिकरण कारक,अपादान कारक,कर्मकारक,कर्ता कारक, करण कारक,संप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक,अल्पविराम,प्रश्न चिह्न,आश्चर्य चिह्न, अवतरण चिह्न ।

काल विचार - अपूर्ण भूतकाल, पूर्ण भूतकाल,सामान्य भूतकाल,सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. क्लर्क, हँसोड, सहृदयता ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.पढे,महत्त्वाकांक्षा,नौकर,धूल,मालिक,बेचैन ।

नये संबोध - महत्त्वाकांक्षा,मजाक,मशगूल,नशा ।

नये शब्द - मालिक,नौकर,दालन,पुरखों,उपनाम,सिलवट,पंप-शू,संबोधन,धुन, बुहारा,पुलिंदा,नादान,जर्द ।

मुहावरे - धुन सवार होना,हक्का-बक्का रहना,मशगूल होना,चेहरा जर्द पडना, माथा ठनकना ।

भाषिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा. क्लर्क, हँसोड, सहृदयता ।

भाषण - संभाषण - उदा.क्लर्क,महत्त्वाकांक्षा, हँसोड,सहृदयता ।अध्यापक का भाषण संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा का ध्यान रखना चाहिए । साथ ही वाक्य में आयी संज्ञाओं को पहचान ने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा. पढ़े-पढे, क्लर्क-क्लार्क, नौकर-नोकर, मालिक-मालक, बेचैन-बैचेन, धूल-धूळ । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप समझाकर

नये शब्दों को लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को मुहावरे देकर उन का वाक्यों में प्रयोग करने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि हर काम अपनी जगह श्रेष्ठ होता है और छात्रों को मुहावरों की और संज्ञा ओं की जानकारी मिलती है ।

पाठ क्रमांक - ४ (गद्य) । शीर्षक - कर्नाटक का रोमांचक खेड्डा ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक कहानी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - हाथी पकड़ने की कई पद्धतियाँ प्रचलित है । कभी पालतू हाथी की मदद से,कभी नरों की गोली दागकर,कभी रास्ते में खोदकर,कभी अँग्रेजी ` वी ` अक्षर जैसा कठघरा बनवाकर हाथी पकड़े जाते है ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को वर्तमान काल व पूर्वप्रत्यय की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त व संधियुक्त शब्द - वनप्रदेश,शक्तिशाली,घ्राणशक्तिवाला,निवासस्थान ।
वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रधान व गौण वाक्य ।
कारक - संबंध कारक,अधिकरण कारण,करण कारक,कर्ता कारक,करण कारक, संप्रदान कारक ।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्पविराम,छोटा निर्देशक,अवतरण चिह्न ।
काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.इंतजाम,जानवर,अँगरेजी,धुआँ,मूँदकर ।

<u>लिखित वर्तनी</u> - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.खेड्डा,जानवर,मुडना,पद्धति,गड्ढा,चौडा,द्वार ।

<u>नये संबोध</u> - मशहूर,नस्ल,मुखिया,रोमांचक,बंधन ।

<u>नये शब्द</u> - खेड्डा,घ्राणशक्तिवाला,गड्ठा,दागना,कठघरा,चौडा,इंतजाम, कुल्हाडी,नटखट ।

<u>मुहावरे</u> - मशहूर होना,लाभ उठाना,पता लगाना,संकेत देना,संघर्ष करना ।

o <u>भाषिक उद्देश्य</u> - <u>श्रवण - आकलन</u> - उदा.इंतजाम,जानवर,धुआँ,मूँदकर,अँगरेजी ।

<u>भाषण संभाषण</u> - उदा.अँगरेजी,धुआँ,मूँदकर,इंतजाम,जानवर ।अध्यापक का संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए । अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए शारीरिक,मानसिक शब्दों का उच्चारण मानक करना चाहिए और छात्रों को समझाना चाहिए कि ` इक ` प्रत्ययांत शब्द का उच्चारण ह्रस्व होता है ।

<u>वाचन</u> - छात्रों को पाठ समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की ह्रस्व मात्रा व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नों पर ध्यान देना चाहिए और उसके अनुसार वाचन करना चाहिए ।

<u>लेखन</u> - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.खेड्डा-खेड्डा,बुद्धी-बुध्दी,चौड़ा-चौडा, पद्धति - पध्दति । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर, कापि में लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को पूर्ण वर्तमान काल के वाक्य देकर अपूर्ण वर्तकाल में लिखने के लिए कहना चाहिए । साथ ही कुछ शब्द देकर उन्हें उचित पूर्व प्रत्यय लगाने के लिए कहना चाहिए ।

o <u>पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान</u> - छात्र वर्तमान काल और पूर्णप्रत्यय के प्रयोग को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - ५ (गद्य) । शीर्षक - चोर या देवता ।
युग आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - भारत के पिता देश रक्षा के लिए सीमा पर तैनात थे। एक दिन भारत को तेज बुखार आया, उस के पास सिर्फ माँ थी । उसी दिन रात के समय एक चोर आया उसने चोरी करने के बजाय डाक्टर को बुलाया । भारत ठीक हो गया । वह चोर नहीं था, देवता था ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि मनुष्य मन से नहीं कर्मों से बुरा होता है। और सर्वनामों की जानकारी देना ।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - बिगड़ना, छोड़ना, पकड़ना ।
वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।
कारक - संबंध कारक, अपादान कारक, करण कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक, कर्ता कारक ।
विराम चिह्न - प्रश्न चिह्न, पूर्ण विराम, अल्पविराम, अवतरण चिह्न, आश्चर्य चिह्न, छोटा निर्देशक, कोष्ठक ।
काल विचार - पूर्णभूतकाल, पूर्ण वर्तमानकाल, अपूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, सामान्य भूतकाल, भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. चोर, सहलाना, कृतज्ञता, तेज, चाकू, चुपचाप ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. सहलाना, पलँग, मुसंबि ।
नये संबोध - देवता, अजनबी ।

नये शब्द - तैनात, सुशील,बुखार,इजाजत,तबीयत,पश्चात ।

मुहावरे - घुल-मिल जाना,आँखो में आसू आना,देखते रहना,आश्चर्य से देखना, कृतज्ञता व्यक्त करना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा.चोर,कृतज्ञता,पलँग,इजाजत,तेज, चाकू,सहलाना ।

भाषण - संभाषण - उदा.चाकू,सहलाना,कृतज्ञता,पलँग,चोर,अध्यापक का भाषण संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों को -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा,परिच्छेद में आए विराम चिह्न,पर ध्यान देकर वाचन करना चाहिए । छात्रों को चोर से संबंधित ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढने के लिए कहा जा सकता है ।

लेखन - छात्र हिन्दी के शब्द लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.पलँग - पलँग,सहलाना - सेहलाना । अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का मानक रूप समझा कर,लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को कुछ वाक्य देकर,वाक्य में आए सर्वनाम छाँटकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को समझाना कि मनुष्य मन से नहीं कर्मो से बुरा होता है और छात्रों को सर्वनामों की जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक - ६ (गद्य) । शीर्षक - एक आँख की दृष्टि ।
युग - आधुनिक युग । विधा - एकांकी ।
संरचना में स्थान - उपदेश परख एकांकी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - महाराज रणजीतसिंह के दरबार में एक मुसलमान युवक कुरान-शरीफ की पोथी पेश करता है । महाराज उस युवक को एक हजार सोने की

मुहरे देते हैं। मंत्री को ये पसंद नहीं, तब महाराज कहते हैं सभी धर्मों को समान रूप से इज्जत करनी चाहिए।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि सभी धर्मों के प्रति समानता या आदर से देखना चाहिए। साथ ही छात्रों को सर्वनामों की जानकारी देना।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त व संधियुक्त शब्द - सेनापति, पहरेदार, हिंदुस्थान, रत्नजटित, कलाकार, कोषाध्यक्ष, गरीबनिवाज, गुरूवचन, सम्मानीय।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, सरल वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक, कर्ता कारक, संप्रदान कारक, आपादान कारक, करण कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अल्प विराम, आश्चर्य चिह्न, प्रश्न चिह्न, छोटा निर्देशक, कोष्ठक।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल, पूर्णवर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, भविष्य काल।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं। उदा. दृष्टि, पहरेदार, शहंशाह, मुहरें, एहसानमंद, हजार, आँका।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा. पहरेदार, शहंशाह, एहसानमंद, विरूद्ध, सम्मान।

नये संबोध - तारीफ, धर्म ग्रंथ, इनाम।

नये शब्द - दर्शन, खुशारवत, अंकित, कारीगरी, कद्रदानी, पोथी, अमूल्य, बख्शे, खुदा, आँका।

मुहावरे - तारीफ करना, मेहनत बेकार होना, पुरस्कार देना, एहसानमंद होना, इज्जत करना।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा.पहरेदार,शहंशाह,मुहरें, एहसानमंद,बख्शो,हजार आँकना,दृष्टि । छात्रों को समझाना कि शब्द में अगर दूसरे स्थान का वर्ण ` ह ` है और पहला वर्ण अकारांत है तो उसका उच्चारण एकारांत होता है ।

भाषण - संभाषण - उदा.पहरेदार,शहंशाह,एहसान मंद,हजार । अध्यापक का भाषण-संभाषण प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए । प्रस्तुत पाठ का छात्रों द्वारा नाटयीकरण किया जा सकता है ।

वाचन - छात्रों को संवादात्मक शैली में पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.पहरेदार - पेहरेदार,शहंशाह - शहेनशाहा,एहसानमंद - उेसानमंद,विरूद्ध - विरूध्द,सम्मान - सन्मान । अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का मानक रूप समझाकर,लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टि रखने वाले व्यक्तियों के नाम लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में सभी धर्मों के प्रति समानता और आदर की भावना निर्माण होती है । और छात्रों को सर्वनामों की जानकारी प्राप्त होती है ।

पाठ क्रमांक ७ (पद्य) । शीर्षक - हम विज्ञान - लोक के वासी ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - वैज्ञानिक आशय की कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - विज्ञान-लोक के वासी धर्म-कर्म,भेदभाव,भूलकर धरती का विकास कर रहे हैं । वे धरती को सुजला-सुफला बनाना चाहते है । मानव का दु:ख-दर्द,उदासी मीटाना चाहते हैं । वे चंदापर चलने का सपना देखते है ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों में नव निर्माण की भावना निर्माण करना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त व संधियुक्त शब्द - अन्वेषक, बुद्धिभाव भेद भाव ।

कारक - संबंध कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, कर्म कारक, अधिकरण कारक, आपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक, अल्प विराम, आश्चर्य चिह्न ।

काल विचार - वर्तमान काल व भविष्य काल ।

वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते है । उदा. विज्ञान, छाँव, जुटाना, बाँधना, काँपना ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा. बुद्धिभाव, काँपना, बाँधना, नहर, विज्ञान ।

नये संबोध - प्यास, अन्वेषक , वामन ।

नये शब्द - मिटाना, नहर, अभ्र, वासी ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. विज्ञान, छाँव, जुटाना, अध्यापक का भाषण - संभाषण- प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावपूर्ण होना चाहिए । छात्रों को आज का विज्ञान विषय पर भाषण करने के लिए कहा जा सकता है ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का सास्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय आरोह-अवरोह और शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा का ध्यान रखना चाहिए । उदा. विज्ञान-विग्यान, नहर-नेहर, बुद्धिभाव-बुध्दीभाव । अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का सही रूप समझाकर, छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को विज्ञान विषय पर दस पंक्तियाँ लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में नवनिर्माण की भावना जागृत होती है ।

पाठ क्रमांक ८ (गद्य) शीर्षक – शेर के बच्चे ।

युग आधुनिक युग विधा – कहानी ।

संरचना में स्थान – साहसी कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय – लखनऊ का चिड़ियाघर बाढ की चपेट में आया है । कुछ पशु पक्षि बच गए । लेकिन शेर के बच्चे डूब रहे हैं और रखवालदार की बन्धी रधिया शेर के बच्चों को बचाती है ।

पाठ का उद्देश्य – छात्रों के मन में भूतदया की भावना निर्माण करना और विशेषण व विशेष्य की जानकारी देना ।

० व्याकरण – वर्ण विचार की दृष्टि से – ` ड़ ` और ` ढ़ ` वर्ण से बने शब्द – चिड़िया घर, पिंजड़ा, चढ़ना, दहाड़ना, घुमड़कर , झोपड़ी ।

वाक्य प्रकार – प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक – संबंध कारक, अधिकरण कारक, कर्म कारक, कर्ता कारक, संप्रदान कारक, संबोधन कारक ।

विराम चिह्न – आश्चर्य चिह्न, छोटा निर्देशक, अल्पविराम, पूर्ण विराम, लोप चिह्न, प्रश्न, अवतरण चिह्न ।

काल विचार – सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, पूर्ण भूतकाल ।

० वर्तनी – मौखिक वर्तनी – छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. चपेट, गैंडा, खूँख्वार, ठहरना, पहले और ` ड़ ` ` ढ़ ` वर्ग से बने शब्द ।

लिखित वर्तन – छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. ठहरना, पहले, गैंडा, और ` ड़ ` ` ढ़ ` वर्ण से बने शब्द ।

नये संबोध – बाढ, खूँख्वार ।

नये शब्द – बारिश, गुफा, सारस, शुतुरमुर्ग, घुमड़ना, शेर, दहाड़ना, छाता, तमाशा, गोते, झरोखा, बौछार, शेरनी ।

मुहावरे - चपेट में आना, बच जाना, डटकर भागना, हमला करना, जान में जान आ जाना, दिल काँप उठना, गले लगाना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. चपेट, गैंडा, बजाय, खूँख्वार, ठहरना, और ` ड़ ` ` ढ़ ` वर्ण से बने शब्द । छात्रों को नये शब्दों का उच्चारण समझाना चाहिए ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने छात्रों को नये शब्दों का मानक उच्चारण समझाकर, उनकी ओर से करवाके लेना चाहिए । उदा. उदण्ठ ` ड़ ` ` ढ़ ` वर्ण से बने शब्द, बजाय, ठहरना, चपेट, गैंडा ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की मात्रा, विरामचिह्नों पर ध्यान देकर, वाचन करना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही अन्य साहसपरक कहानियाँ पढने के लिए कहा जा सकता है ।

लेखन - भाषा सीखते समय लेखन महत्त्वपूर्ण है । छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा. गैंडा - गैंडा, ठहरना - ठेहरना, रहना - रेहना और ` ड़ ` ` ढ़ ` वर्ण से बने शब्द लिखते समय वर्ण के निचे नुक्ता देना भूलते हैं । छात्रों को परिच्छेद देकर उस में आए विशेषण और विशेष्य छाँटकर कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में भूतदया की भावना निर्माण होती है और छात्र विशेषण और विशेष्य को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक ९ (गद्य) । शीर्षक - आधुनिक भीम ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - साहसी कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - राममूर्ति के माता-पिता बचपन में मर गये थे । राममूर्ति सर्कस में काम करने लगा । १८९१ ई. में ` राममूर्ति सर्कस ` का निर्माण हुआ । एक दिन सर्कस का खेल दिखाते समय वह दुर्घटना में घायल हो गया । उसने खेल बंद किया

और राममूर्ति हिंदू विश्वविद्यालय में व्यायाम के शिक्षक बने । १९३५ ई.में राममूर्ति स्वर्ग सिधारे ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों में साहस निर्माण करना एवं कसरत के प्रति रुचि निर्माण करना । साथ ही मुहावरें और विशेषणों की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संयुक्त शब्द - चिट्टा,हट्टा-कट्टा, हिस्सा,रस्सा ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,प्रधान वाक्य व गौण वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक,कर्ता कारक,संबंध कारक,कर्म कारक,करण कारक,संप्रदान कारक,आपादान कारक ।

विराम चिह्न - अवतरण चिह्न,प्रश्न चिह्न,स्वल्प अवतरण चिह्न,अल्प विराम, पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य भूतकाल,अपूर्ण वर्तमान काल,सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल,भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.मृत्यु, चमत्कार,प्राणायाम,स्वर्णपदक,माँजकर ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.चिट्टा,हट्टा,कट्टा,पेद्दापुर,अद्भुत ।

नये संबोध - तेजस्वी,चमत्कार,नींव,स्वर्णपदक ।

नये शब्द - समाचार - पत्र,ठिठकना,रोमन रिंग, मसल कंट्रोल,निर्धन,मनौती, रिश्तेदार,कील,तख्ता,कीर्ति,सिलसिला,पसलियाँ,घुटना ।

मुहावरे - पारावार न रहना,श्री गणेश करना,मनौती करना,शिकार हो ना, बाज आना,स्वर्ग सिधारना,टस से मस न होना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.मृत्यु,चमत्कार,मैहल,प्राणायाम, स्वर्णपदक,मैंजकर ।

भाषण - संभाषण - उदा.मृत्यु,प्राणायाम,स्वर्णपदक ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -हस्व व दीर्घ मात्रा,विराम चिह्नों पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को सर्कस से संबंधित ऐसी ही अन्य साहसी कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते है । उदा.हट्टा-हट्टा, कट्टा - कट्टा ,फैददापुर,चिट्टा-चिट्टा । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप छात्रों समझाना चाहिए और लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को मुहावरों का वाक्य में प्रयोग करने के लिए और वाक्यों में आए विशेषण पहचान कर कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में कसरत के प्रति रुचि एवं साहसी भावना निर्माण होती है और छात्रों के मुहावरें और विशेषणों की जानकारी प्राप्त होती है ।

पाठ क्रमांक १० (गद्य) शीर्षक - मैंरा मैया ।

युग - आधुनिक काल विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - वर्णनात्मक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आयशय - बाग में फूल खिले हैं। मैंरा कोने में फूलों ने फटकार ने के कारण उदास बैठा है ।तोतली,मधुमक्खि,उसे लेकर फूलों के पास आते हैं ।कमल,फूल और भौंरे का झगडा समाप्त कर देता है । दिन भर खेलने के बाद मैंरा कमल की गोद में सो जाता है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को क्रिया कीजानकारी देना और समझाना कि मनुष्य सौन्दर्य से नहीं गुणों से समाज में सम्मान पाता है ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - मंद-मंद, कभी-कभी, अच्छा-अच्छा ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य, सरल वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक, संबंध कारक, संबोधन कारक, कर्ता कारक, आपादान कारक, कर्म कारक, संप्रदान कारक, करण कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक, अल्पविराम, अवतरण चिह्न, प्रश्न चिह्न, आश्चर्य चिह्न ।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, सामान्य वर्तमानकाल, भविष्यकाल ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. बीचोबीच, सैंकड़ो, भौंरा, काँटा, सहमना, शहद, बहलाना, पंखुड़ियाँ ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. कमल, तालाब, सैंकड़ो, काँटा, भौंरा, शहद, सहमना, बहलाना ।

नये संबोध - वायु, नाराज ।

नये शब्द - गेंदा, शीतल, गुमसुम, मधुमक्खी, फटकार, शहद, गुनगुनाना ।

मुहावरे - नाराज होना, चुपचाप बैठना, बहुत आनंद होना, दिल बहलाना ।

भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. बीचोबीच, सैंकड़ो-काँटा, सहमना, शहद, बहलाना, भौंरा, तड़कर ।

भाषण संभाषण - जब अध्यापक बोलते समय नये शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं तब छात्र सुनते हैं और दूसरों के साथ बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं । उदा. बीचोबीच, सैंकड़ो, काँटा, सहमना, शहद, बहलाना ।

वाचन - छात्रों को पाठ का आशय समझने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही अन्य वर्णनात्मक कहानियाँ पढ़ने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.काँटा-काटा, शब्द-शेब्द, बहलाना - बेहलाना, भौरा-भवरा, सैकड़ो - सेकड़ो, सहमना - सेहमना । अध्यापकों ने छात्रों को नये शब्दों का मानक रूप समझाकर, लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को प्रस्तुत पाठ का एक परिच्छेद देकर क्रियाएँ छाँटकर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों को क्रिया की जानकारी होती है और छात्र समझते है कि मनुष्य सौन्दर्य से नहीं गुणों से समाज में सन्मान पाता है ।

पाठ क्रमांक ११ (पद्य) । शीर्षक - पूनो आयी, राखी लायी ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - सांस्कृतिक आशय की कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - सावन में चारों ओर हरियाली छायी है । पुनम के दिन बहन पूजा का थाल लेकर भाई को राखी बाँधने के लिए बुला रही है । धन्य है वह भाई जिसके कलाई पर बहन यह पवित्र धागा बांधति है ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों को राखी का महत्त्व समझाना और अपनी जिम्मेदारियों का अहसास निर्माण करना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरूक्तिवाले शब्द - झीनी-झीनी, भीनी-भीनी, आओ - आओ ।

कारक - संबंध कारक, करणकारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम, पूर्ण विराम, आश्चर्य चिह्न, अवतरण चिह्न, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा. राखी, पहतीं, सावन - सजा, बहन, चंदन ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. राखी, सावन, बहन, पहतीं ।
नये संबोध - सुगंध, धागा, सावन, राखी ।

नये शब्द - पूनो, झीनी-झीनी, तरंग, दोली, चंदन, सकुचाना, उपहार, सुभागा ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. राखी, सावन, बहन, पहतीं ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए । तब ही छात्र दूसरों के साथ बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं । उदा. राखी, पहतीं, सावन, सजा, बहन, चंदन ।
वाचन - छात्रों को भावपूर्ण ढंग से कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को त्योहार से संबंधित या भाई-बहन के प्यार से संबधित ऐसी ही अन्य कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।
लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा. राखी-राकी, सावन-श्रावण, बहन - बेहन या बहीन । अध्यापकों ने नये शब्दों का मानक लेखन छात्रों की ओर से करवाके लेना चाहिए । छात्रों को रक्षा-बंधन विषय पर दस पंक्तियाँ कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र राखी का महत्त्व एवं भाई-बहन का प्यार समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १२ (गद्य) । शीर्षक - भीख और दान ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - देशप्रेम परक कहानी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - शिवमंदिर का पुजारी बालकराम था । नगर में मार-काट हो रही थी । एक दिन अँग्रेज युवक - युवती मंदिर में छिपने के लिए आए हैं । जब वे चले गए तब अँग्रेजोंने बालकराम को पकड लिया और खून चाहने के लिए कहा । बालकराम ने इन्कार करने पर उसे मार डाला ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों में देश प्रेम की भावना निर्माण करना और अव्ययों की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - खेदड, सडक, चमडी ।
वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादि बोधक वाक्य, सरल वाक्य, प्रधान वाक्य गौण वाक्य ।
कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, संप्रदान कारक, कर्म कारक, करण कारक, कर्ता कारक, आपादान कारक ।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम, छोटा निर्देशक, अवतरण चिह्न, अल्प विराम, प्रश्नचिह्न, आश्चर्य चिह्न, लोप चिह्न ।
काल विचार - पूर्ण भूतकाल, सामान्य भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, अपूर्ण वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान काल, भविष्य काल ।
० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते है । उदा. अँगरेजी पिस्तौल, अँधेरा, जा, जनरल, चाहना, खदेडना, चमडी, सडक ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. कानपुर, सडा, चमडी, खदेडना ।
नये संबोध - मंदिर, क्रांति, आजादी, कृतज्ञता, पुजारी ।

नये शब्द - खदेड़ना, मार-काट, लालटेन, कब्जा, बत्ती, बीबीघर, फर्श, दुबारा ।

मुहावरे - बरबाद होना, खदेड़ देना, कब्जा करना, कृतज्ञता व्यक्त करना, मरते दम तक ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण- आकलन - उदा. अँगरेजी, अँधेरा, पिस्तौल, ज्या, कृतज्ञता, जनरल, चाहना ।

भाषण संभाषण - अध्यापकों ने बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए तब ही छात्र दूसरों के साथ बोलते समय शब्दों का मानक उच्चारण करते हैं । उदा. अँगरेजी, अँधेरा, पिस्तौल, ज्या, कृतज्ञता ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय शब्दों की -हस्व व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नोंपर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को अँगरजों के अन्याय-अत्याचार से संबंधित ऐसी अन्य कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र हिन्दी के शब्द या पाठ में आए नये शब्द लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा. कानपुर - कानपूर, सड़क - सडक, ज्या- ज्या, खदेड़ना - खदेडना । कानपुर, कोल्हापुर, सोलापुर आदि शब्दों में ` पु ` -हस्व होती है इसकी जानकारी देना ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में देशप्रेम एवं देश के प्रति अभिमान की भावना निर्माण होती है और छात्र अन्ययों को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १३ (गद्य) । शीर्षक - वे जामुन के पेड ।
युग - आधुनिक युग । विधा - संस्मरण ।
संरचना में स्थान - बच्चों के प्रति प्यार करने वाले नेहरू जी का संस्मरण ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - नेहरूजी की गाडी राजपथ से जा रही थी । बाग में जामुनों के गुच्छे लटक रहे थे । लेकिन बाग में बच्चे नहीं थे । चाचा ने पुछताछ करने पर पता चला कि महापौर ने बाग का ठेका दिया था । चाचा ने बाग के चौकीदार ।

को हटाया । अब बच्चे बाग में शरारत कर रहे हैं,जामुन खा रहे हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को नेहरूजी का बच्चो से प्यार समझाना और नेहरू जी के प्रति आदर निर्माण करना । साथही छात्रों को लिंग की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - राजमार्ग, पदाधिकारी,नागरीक,जमघट ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,विस्मयादिबोधक वाक्य,प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - करण कारक,संबंध कारक,आपादान कारक,अधिकरण कारक,कर्ता कारक, संप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - लोप चिह्न,पूर्ण विराम,अल्पविराम,अवतरण चिह्न,छोटा निर्देशक, आश्चर्य चिह्न,अर्ध विराम ।

काल विचार - सामान्य भूतकाल,अपूर्ण वर्तमान काल,सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.चाचा,छः,मुठ,महसूस,बहरे,चौकोदार ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते है । उदा.चाचा,गुढ,महसूस,बहरे,चौकीदार ।

नये संबोध - महसूस,चाचा,गुढ ।

नये शब्द - उन्नति,जामुन,गुच्छे,परेशान,उदास,सेक्रेटरी,महापौर,तरकीब,ठेकेदार, सीना,दिमाग,खयाल,गंदगी,जमघट ।

मुहावरे -- उदास लगना,नजर आना,राह देखना,सीनागर्व से फूल जाना,तरकीब निकालना,तनकर बोलना,हल होना,वंचित रखना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.छः ,गुढ,चाचा,महसूस,बहरे, चौकीदार ।

भाषण - संभाषण - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का मानक उच्चारण करना चाहिए और छात्रों की ओर से करवा के लेना चाहिए । उदा.छः, महसूस,चाचा,बहरे ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों से नेहरूजी का जीवन चरित्र या नेहरू से संबंधित छोटी-छोटी कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.चाचा-चाच्या,महसूस-मैहसूस,बहरे-बेहरे, गुढ़ - गुठ या गुळ । छात्रों को कुछ मुहावरे देकर वाक्य में प्रयोग करने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र नेहरू जी के प्यार को समझाते हैं और छात्रों के मन में नेहरूजी के प्रति आदर की भावना निर्माण होती है । साथ ही छात्रों को लिंग की जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक १४ (पद्य) । शीर्षक - उड चली गगन छूने पतंग ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।

संरचना में स्थान - वर्णनात्मक कविता ।

कविता का संक्षिप्त आशय - गगन में पतंग उड रही है । वह गगन की रानी है, सूरज को छूना चाहती है । उस में फूर्ति है,उमंग है । आकाश में कटा-कटी का दाँव चल रहा है । लेकिन यह पतंग बच गयी है । गगन में उडने के बाद भी पतंग धरती के संग है ।

कविता का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि मनुष्य की ऊँची आकांक्षा होनी चाहिए और बडा होने पर छोटों को नहीं भूलना चाहिए ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - मछली-सी, नागीन-सी, हिरनी-सी ।
कारक - आपादान कारक, करण कारक, अधिकरण कारक, संबंध कारक ।

विराम चिह्न - अल्पविराम, छोटा निर्देशक, पूर्ण विराम, लोप चिह्न, आश्चर्य चिह्न ।

काल विचार - वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा. सँवार, पूँछ, नाच, दाँव, रहना ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. रहना, इंद्रधनुष्य, नीली, दाँव ।
नये संबोध - इंद्रधनुष्य, नाच, दाँव ।

नये शब्द - मुर्गा, सैलानी, फूर्ति, सींचना, तन, जामुनी, अंबर, बगुला, संग ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. लंबी, पूँछ, सँवार, दाँव ।

वाचन -

अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । वाचन करते समय आरोह-अवरोह और मात्रा का ध्यान देना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही अन्य वर्णनात्मक एवं आसान कविता पढने के लिए कहना चाहिए ।
लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा. रहना, नीली, दाँव ये शब्द क्रमानुसार रेहना, नीळी, डाँव इस रूप में लिखते हैं । छात्रों को पतंग उडाने का अनुभव दस पंक्तियों में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते है कि मनुष्य की ऊँची आकांक्षा होनी चाहिए और बड़ा होने पर छोटों को नहीं भूलना चाहिए ।

पाठ क्रमांक १५ (गद्य) । शीर्षक - देश के नन्हें शासक ।
युग - आधुनिक युग । विधा - निबंध ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक निबंध ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - इसराइल में गाँव के शासन की बागडोर छोटे बच्चे संभालते हैं । बच्चे ही खेत में काम करते हैं और निर्णय लेते हैं । वे स्वावलंबन का पाठ पढ़ाते है । बच्चे खुद मेहनत करते है,साफ-सफाई करते हैं । नृत्य,संगीत,खेल, सिनेमा,से मन बहलाव करते हैं । बच्चों का जीवन गाँवो में बड़ा सुखदायी होता है ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों में नेतृत्व एवं जिम्मेदारी की भावना निर्माण करना और वचन की जानकारी देना ।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त व संधियुक्त शब्द - महाद्विप, दवाखाना, मनपसंद,समूहगान,स्वावलंबन, उद्योगशाला ।
वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।
कारक - संबंध कारक,अभिकरण कारक,करण कारक,आपादान कारक ।
विराम चिह्न - पूर्ण विराम,छोटा निर्देशक,अल्प विराम,स्वल्प अवतरण चिह्न ।
काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल,अपूर्ण वर्तमान काल ।
० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.चौथा,कहलाने वाला,ढेढ,खेल,तंदुरूस्त,नि:संदेह,अखाड़ा ।
लिखित वर्तनी -- छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.ढेढ,अखाड़ा,बहलाना,नि:संदेह,महाद्विप ।
नये संबोध - शासक,धर्म, सरकार,स्वावलंबन ।

नये शब्द - यहूदी, शामिल, औसत, बागडोर, संगठन, चुनाव, कायदा , कानून, मामला, सलाह, मशविरा, तरकारी, सींचना ।

मुहावरे - धूमधाम से मनाना, प्राप्त होना, आयोजन करना, ध्यान रखना, मन बहलाना ।

o भाषिक - उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. ढेढ, चौथा, अखाडा, बहलाना, नि:संदेह ।

भाषण - संभाषण - उदा. चौथा, नि:संदेह, बहलाना, धारवाडा, तंदुरुस्त । अध्यापकों ने छात्रों के दल बनवाकर ऐसे ही कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए ।

वाचन - छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अन्य देश के बच्चे अपने देश का शासन चलाने के लिए क्या करते हैं यह जानने के लिए अन्य कहानियाँ पढने को कहना चाहिए ।

लेखन - उदा. ढेढ - ढेठ, आखाडा - आखाडा, बहलाना - बेहलाना, नि:संदेह - निस्संदेह । इन शब्दों का अध्यापकों ने छात्रों को मानक रूप समझाकर, लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को शब्दों के वचन पहचान कर वही में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में नेतृत्व, जिम्मेदारी, निर्णय क्षमता आदि गुणों का विकास होता है । और छात्रों को वचन की जानकारी होती है ।

पाठ क्रमांक - १६ (गद्य) । शीर्षक - तुलसी का रामप्रेम ।

युग - भक्तिकाल । विधा - एकांकी ।

संरचना में स्थान - भक्तिपरक एकांकी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - एक बालक मंदिर में भगवान से भोजन की माँग कर रहा है । वह राम की मूर्ति लेकर भागता है । उसकी मुलाकात बाबा नरहरिदास से हो जाती है । बालक का नाम तुलसीदास है । नरहरिदास तुलसीदास के गुरु

बनते हैं । गुरूपूर्णिमा के दिन तुलसीदास गुरू के चरणों पर कमलपत्र रखता है । और दोहा लिखते हैं । दोहा पढकर गुरू कहते हैं कि तुम्हारी रचना लोक कल्याण के लिए आयेगी और तुम्हारा नाम अमर हो जायेगा ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को संत तुलसीदास की राम भक्ति और वर्तमान काल की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संयुक्त शब्द - स्वीकार,अमूल्य,आत्माराम, कल्याण ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक,कर्म कारक,संप्रदान कारक,आपादान कारक,करण कारक, अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - अल्पविराम,पूर्ण विराम,प्रश्न चिह्न ,कोष्ठक ,आश्चर्य चिह्न, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल,भविष्य काल,अपूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा.खिडकी,भेंट,प्राण,कल्याण,आज्ञा,पहचानना,कृपा ।

लिखित वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय गलतियाँ करते हैं । उदा.खिडकी,दयालु,प्राण,कल्याण,पहचानना ।

नये संबोध - गुलाम,मुर्ति,मुहूर्त ,अमर ।

नये शब्द - प्रसाद,चिंता,दंड,अमूल्य,बंदी,कंज,सिंधु,तम,निकर ।

मुहावरे - साथ रहना,भाग जाना,आशीर्वाद देना,अमर होना ।

मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.खिडकी,भेंट,प्राण,कल्याण,आज्ञा, कृपा,पहचान ।

भाषण - संभाषण - उदा.भैंट,प्राण,खिड़की,कल्याण,कृपा,आज्ञा,पहचान । अध्यापक,छात्रों द्वारा प्रस्तुत पाठ का नाटीकरण ले सकते है ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुतपाठ का संवादात्मक शैली में वाचन करना चाहिए । छात्रों की ओर से पाठ का वाचन नाटयीकरण पद्धति से लेना चाहिए । छात्रों को तुलसीदास दास से संबंधित अन्य साहित्य पढने के लिए कहा जा सकता है ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.खिड़की - खिडकी,दयालु - दयाळू, प्राण - प्रान,कल्याण - कल्यान, पहचानना - पेहचानना । अध्यापकों ने नये शब्दों का मानक रूप समझाकर,छात्रों की ओर के लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को कुछ वाक्य देकर,वाक्य में आयी वर्तमान क्रियाएँ छाँटकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र संत तुलसीदास की राम भक्ति और वर्तमान काल को समझते है ।

पाठ क्रमांक - १७ (गद्य) ।   शीर्षक - छोटूराम ।

युग - आधुनिक युग ।   विधा - कहानी ।

संरचना में स्थान - देशप्रेमपरख कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - छोटूराम कद से बौना था । भारत - पाक युद्ध चल रहा था, पाक सैनिक मारी पड रहे थे । छोटूराम मुर्गियों के दरबे में छिप गया था । वह दरबे से बाहर निकला और बम लेकर दुश्मनों के पिछे गया । 'जयहिन्द' का नारा लगाते हुए बम दुश्मनों पर फैंक दिया और छोटूराम शहीद हो गया ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों में देशप्रेम एवं साहसी वृत्ति निर्माण करना और देशप्रेम जागृत करना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - द्विरुक्तिवाले शब्द - धीरे - धीरे, छिपता - छिपता ,एक-एक, जोर-जोर ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,विस्मयादिबोधक वाक्य,प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक,आपादन कारक,करण कारक,अधिकरण कारक,कर्ता कारक, संप्रदान कारक,कर्म कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,अवतरण चिह्न,प्रश्न चिह्न,आश्चर्य चिह्न,छोटा निर्देशक,स्वल्प अवतरण चिह्न ।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल,अपूर्ण भूतकाल,सामान्य भूतकाल,अपूर्ण वर्तमान काल ।

वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.अचानक,झाँकना, जवान,जोश,चौकी ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.चिढना,लड़ाई,फैंका ।

नये संबोध - हमला,चौकी,सीमा,पागल ,शहीद ।

नये शब्द - बैना,शिकायत,दीवार,दुश्मन,दरबा,बम,पत्थर,घास ।

मुहावरे - हमला बोलना,छिप जाना,मारी पड़ना,शिकार होना,ढेर होना, नारा लगाना,पता चलना,गुस्सा आना,शहीद होना ।

० पाठ्यक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.अचानक,चौकी,झाँकना,जोश, जवान ।

भाषण संभाषण - उदा.अचानक,जोश,चौकी,झाँकना,जवान । अध्यापक का भाषण-संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नोंपर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को ऐसी ही साहसपरक एवं देशभक्ति पर अधारित कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.चिढ़ना-चिढना,लढ़ाई-लाढाई,फेंका-फेका । अध्यापकों ने नये शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर छात्रों की ओर से लिखवाकर लेना चाहिए । छात्रों को समानार्थी शब्दों के जोड़े लगाने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों में देशप्रेम एवं साहसी वृत्ति निर्माण होती है ।

पाठ क्रमांक - १८ (पद्य) । शीर्षक - रोशनी लुटायें ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - चारों ओर दीपक जल रहे हैं । अँधेरा दूर कर रहे हैं । बच्चों ने भी दीपक के भाँति बुराई,भेद-भाव को तोडना चाहिए,रोशनी लुटानी चाहिए ।
कविता का उद्देश्य - छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना निर्माण करना और अनुस्वार एवं चंद्रबिंदी के उच्चारण की जानकारी देना ।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - तोड,खडे ,उठी ।
कारक - संबंध कारक,कर्ता कारक,करण कारक ।
विराम चिह्न - अल्प विराम,छोटा निर्देशक,अर्ध विराम,पूर्ण विराम,आश्चर्य चिह्न ।

काल विचार - वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.बाजार,ह्जार,उठो,चाँद,चाँदनी,हों,मौति,लुटायें ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.गली,दीपक,चाँद,रानी,चाँदनी ।
नये संबोध - रोशनी,सुमन,मुहल्ला ।

नये शब्द - ग्राम,नगर,डगर,हाह,अनगिन,ठानी,मेहमान,लुटेरे ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा.बाजार,ह्जार,उठो,चाँद,चाँदनी,हों, मौति,लुटायें ।
भाषण संभाषण - अध्यापकों ने छात्रों को अनुस्वार और चंद्रबिंदी के उच्चारण को समझाना चाहिए । उदा.चाँद,चाँदनी,हों,लुटायें,बाजार,ह्जार,मौति ।
वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को कविता की आखिरी दो कड़ियाँ कंठस्थ करने के लिए कहना चाहिए । साथ ही राष्ट्रीय एकता पर आधारित ऐसी ही अन्य कविताएँ पढने के लिए कहना चाहिए ।
लेखन - उदा.गली - गल्ली,दीपक-दिपक, चाँद-चांद,रानी - राणी,चाँदनी - चांदनी,हों - हो,लुटायें - लुटाये । अध्यापकों ने छात्रों की इन गलतियों में सुधार करना चाहिए ।
० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में राष्ट्रीय एकता की भावना निर्माण होती है और छात्र अनुस्वार व चंद्रबिंदी के उच्चारण को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - १९ (गद्य) । शीर्षक - पदियों का पुरस्कार ।

युग - प्राचीन युग । विधा - संवादात्मक पाठ ।

संरचना में स्थान - उपदेशापरक गद्य पाठ ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - लाल परी ने नीलम परी को बच्चा ढूँढकर लाने के लिए कहा है । परी को भारत के बच्चे पसंद है । फुलजारी में बच्चे खेल रहे है, लाल परी उन बच्चों में से समय को महत्त्व देने वाले बच्चे को पुरस्कृत करने के लिए चुनती है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समय का महत्त्व समझाना और भविष्य काल की क्रियाओं की जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - ढूँढना, बड़ा, पढ़ना ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, सरल व संक्षिप्त वाक्य ।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, कर्ता कारक, आपादान कारक, करण कारक ।

विराम चिह्न - छोटा निर्देशक, स्वल्प अवतरण, पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न, अल्प विराम, लोप चिह्न, कोष्ठक, आश्चर्य चिह्न ।

काल विचार - भविष्य काल, सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में और नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. दृश्य, क्षमा, सच, कृष्ण, घड़ी, मल्क ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. मल्क, घड़ी, बल, ढूँढना, पढना ।

नये संबोध - परी, सुहानी, लीला, पुरस्कार, सेवा, गुण ।

नये शब्द - होनहार, पूत, निहाल, परख, खुशबू, पाबंध ।

मुहावरे - क्षमा करना, चमकते रहना, सफलता पाना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. दृश्य, क्षमा, सच, कृष्ण, घड़ी, महक ।

भाषण - संभाषण - उदा. क्षमा, घड़ी, दृश्य, सच, कृष्ण, महक । छात्रों द्वारा प्रस्तुत पाठ का नाटयकिरण किया जा सकता है ।

वाचन - अध्यापकों ने वाचन करते समय शब्दों की -ह्रस्व व दीर्घ मात्रा और विराम चिह्नों पर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । उदा. घड़ी-घड़ी, बल-बळ, महकना-मेहकना, ढूँढना-ढूँढना । अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों को समझाकर छात्रों की ओर से मानक रूप में लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को कुछ वाक्य देकर, या पाठ में आयो भविष्य काल की क्रियाएँ छाँटकर बही में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समय का महत्त्व और भविष्य काल की क्रियाओं को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक २० (पद्य) । शीर्षक - बचत ।
युग - आधुनिक युग । विधा - निबंध ।
संरचना में स्थान - वर्णनात्मक निबंध ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - निरू एक कारखाने में मिस्त्री था । हररोज उस की मुलाकात दूकानदार लाला से होती थी । लाला उसे बचत का महत्त्व समझाता है । निरू डाकबाबू को लेकर डाकखाने में जाता है और बचत का महत्त्व व बचत कैसे की जाती है इस के बारे में जानकारी देता है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को बचत का महत्त्व समझाना ।

व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संयुक्त शब्द - नुक्कड़, छवा, छुट्टी, शक्कर ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, प्रधान वाक्य, गौणवाक्य ।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक, करण कारक, कर्ता कारक, अपादान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, अवतरण चिह्न, छोटा निर्देशक, प्रश्न चिह्न, आश्चर्य चिह्न, अल्प विराम ।

काल विचार - पूर्ण भूतकाल, सामान्य वर्तमान काल, अपूर्ण भूतकाल, सामान्य भूतकाल, पूर्ण वर्तमान काल, भविष्य काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. बचत, मिस्त्र, रहना, मँहगाई, गुंजाइश, जरूर, संचय, बैंक, निश्चित ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा. टिकट, महँगाई, बैंक, रहना, मिस्त्री, तुक्कड, शाक्कर ।

नये संबोध - बचत, थैली, चित्र, टिकट ।

नये शब्द - तुक्कड, फुरसत, शक्कर, पुस्तिका, प्रतिशत, काहे, छपा ।

मुहावरे - सलाह देना, चकित रहना, सोचते रहना, मुक्त में मिलना, काम आना ।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. बचत, मिस्त्री, रहना, महँगाई, गुंजाइश, जरूर, संचय, बैंक, निश्चित।

भाषण - संभाषण - उदा. संचय, बैंक, निश्चय, महँगाई, गुंजाईश, बचत, जरूर ।

छात्रों की ओर से बचत के बारे में चर्चा लेनी चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को बचत संबधित ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - अध्यापकों ने बैंक-बॅंक, टिकट-तिकट, रहना - रेहना, मिस्त्री-मेस्त्री, नुक्कड-नुक्कड, शक्कर - शक्कर । इन नये शब्दों का मानक रूप समझाकर, छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को गॉव के हाक्खाने में जाकर बचत के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम - के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र बचत का महत्त्व समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक - २१ (पद्य) । शीर्षक - चक्र - महिमा ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - अगर चक्र न होता तो प्रगति नहीं होती । यह चक्र कृष्ण के हाथ में है । गाडी, यंत्र, मशीन, चरखा, के लिए चक्र आवश्यक है । सैनिक को वीर-चक्र दिया जाता है । राष्ट्र ध्वज पर चक्र दिखाई देता है । चक्र प्रगति का प्रतीक है ।
कविता का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि गतीशालिता ही प्रगति का मूल है ।

व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - गाडी, बढना, अगाडी, पिछाडी ।

कारक - संप्रदान कारक, संबंध कारक, कर्म कारक, करण कारक, अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - छोटा निर्देशक, अल्प विराम, पूर्ण विराम ।

काल विचार - वर्तमान काल, भूतकाल ।

वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. आजादी, धूप, बचाना, रण, प्रगति, आगाडी, पिछाडी ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह छात्र लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.प्रगति,आगाडी,पिछाडी,कौशाल ।

नये संबोध - महिमा,प्रगति,वीर-चक्र,आजादी,राष्ट्र-ध्वज ।

नये शब्द - गति,प्रियदर्शी,अगाडी,पिछाडी,नाप,कौशाल,हरदम ।

० मौखिक उददेश्य - श्रवण आकलन - उदा.उत्कंठ,आजादी,धूप,बचाना,रण, प्रगति,आगाडी,पिछाडी ।

भाषण संभाषण - उदा.आजादी,धूप,बचाना,रण,प्रगति,अगाडी,पिछाडी ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करने के लिए कहना चाहिए । अध्यापकों ने छात्रों को परिवर्तन का महत्त्व स्पष्ट करनेवाली अन्य कविताएँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.प्रगति - प्रगती,कौशल-कौशल्य, रण-रन,अगाड़ी-अगाडी,पिछाड़ी-पिधाडी । अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों मानक रूप छात्रों को समझाकर,छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उददेश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि गतीशीलता ही प्रगति का मूल है ।

पाठ क्रमांक - २२ (गद्य) । शीर्षक - किस्सा एक दियासलाई का ।
युग - आदिकाल । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - आत्मकथात्मक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - दियासलाई का निर्माण इंग्लैंड के व्यापारी जान वाकर ने किया । उसने रासायनिक द्रव्य का घोल तैयार किया और वह रगड ने के बाद आग निर्माण होने लगी । कुछ दिन बाद लंदन के व्यापारी ने डिबिया के अगल में

पीला फास्फोरस लगाया और डिबियाँ में तिलियाँ रखी । आज उसे ही ` सैफ्टी मैच ` कहते हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना की मनुष्य ने अपनी- अपनी जगह खुश रहना चाहिए । छात्रों में जिज्ञासु वृत्ति निर्माण करना और समुच्चय बोधक अव्ययेां की जानकारीदेना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - झागड़ा, रगड़,दुकड़ा,थोड़ा ।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य,सरल वाक्य,प्रधान वाक्य व गौण वाक्य ।

कारक - अधिकरण कारक,संबंध कारक,कर्ता कारक,करण कारक,संप्रदान कारक, आपादान कारक,कर्म कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम,पूर्ण विराम,अवतरण चिह्न,छोटा निर्देशक, प्रश्न चिह्न, स्वल्प अवतरण चिह्न ।

काल विचार - सामान्य भूतकाल,अपूर्ण भूतकाल,पूर्ण भूतकाल,सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.झागडा,लैंप,इंग्लैंड,सँभलना,लकडी,टुकडा,वैज्ञानिक,चीड ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.झागडा,थाली,टुकडा,दाल,इंग्लैंड,लंदन,कागज,द्वारा,चिड,लेबिल ।

नये संबोध- किस्सा,रसोईघर,द्रव्य,डिबिया ।

नये शब्द - दियासलाई,चौका,कटोरा,बटलोई,घोल,दगडना,फास्फोरस,मसला, मोम,धंधा ।

मुहावरे - शेखी बघारना,अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनाना,लोहा मानना,चौंक उठना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.झागडा,लैंप,इंग्लैंड,सँभालना,लकडी, टुकडा,वैज्ञानिक,चीड ।

भाषण संभाषण - उदा.झगडा,लैंप,इंग्लैंड,लकडी,वैज्ञानिक,चीड,संभालना,टुकडा ।

अध्यापक का भाषण - संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाह पूर्ण होना चाहिए । छात्रों द्वारा पाठशाला में अन्य किर्जों की खोज के बारे में चर्चा की जा सकती है ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।

पाठ का आशय समझने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को वैज्ञानिक खोजों पर आधारित कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.थाली-थाली,दाल-डाळ,या डाळ,द्वारा - द्वारा,लंदन-लंडन,चीड़-चीड, टुकडा-तुकडा या टुकडा,लेबिल-लेबल,इंग्लैंड - इंग्लंड । अध्यापकों ने छात्रों को उपर्युक्त शब्दों का मानक रूप समझाकर,छात्रों की ओर से शब्द लिखकर लेने चाहिए । साथ ही छात्रों को पाठ में आए समुच्चय बोधक अव्यय ढूँढकर बही में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में जिज्ञासु वृत्ति निर्माण होती है और छात्र समुच्चय बोधक अव्ययों को समझते हैं । छात्र समझाते हैं कि,मनुष्य ने अपनी-अपनी जगह खुश रहना चाहिए ।

पाठ क्रमांक - २१ (गद्य) । शीर्षक - नेताजी की पुकार पर ।

युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।

संरचनामें स्थान - राष्ट्रप्रेम परख कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - जब नेताजी सभा में सर्वस्व-त्याग का आवाहन करते हैं तब एक बुढी अपना बच्चा स्वतंत्रता के लिए प्रस्तुत करती है । और वह बच्चा शहीद होता है । दूसरे प्रसंग में बुढी बच्चे की तस्वीर का सोने का फ्रेम,नेताजी को देती है और अपनी राष्ट्रभक्ति प्रकट करती है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम और नेताजी के प्रति आदर निर्माण करना और संबंध बोधक अव्ययों की जानकारी देना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - बमबारी, नवयुवक,वीरगति,बलिदान,गुप्तचर,कार्यालय,बलिवेदी ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य, संयुक्त वाक्य ।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, कर्ता कारक, करण कारक, आपादान कारक, संप्रदान कारक, कर्म कारक ।

विराज चिह्न - अल्प विराम, पूर्ण विराम, कोष्ठक, छोटा निर्देशक, बड़ा निर्देशक, अवतरण चिह्न, आश्चर्य चिह्न, लोप चिह्न, कोलन ।

काल विचार - अपूर्ण भूतकाल, सामान्य वर्तमान काल, पूर्ण वर्तमान काल, भविष्यकाल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा. आवाहन, प्रणाम, स्वयं, हाँ, टैंक, चुका, पलड़ा, वजन, पूँजी ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते करते हैं । उदा. आवाहन, स्वयं, टैंक, पलड़ा, वृद्धा, घायल, अमरीकी ।

नये संबोध - पुकार, आवाहन, गर्व, आक्रमण, कार्यालय ।

नये शब्द - समाचार, हाल, बमबारी, जेवर, मार्मिक, टाँची, तौलना, समारोह, तराजू, फ्रेम ।

मुहावरे - आवाहन करना, वीरगति को प्राप्त होना, गर्व करना, हमला करना, घायल होना, रो पड़ना, अर्पन करना ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा. आवाहन, प्रणाम, स्वयं, हाँ, टैंक, पलड़ा, वजन, पूँजी ।

भाषण - संभाषण - उदा. टैंक, स्वयं, आवाहन, पलड़ा, पूँजी । अध्यापक का भाषण-संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाह पूर्ण होना चाहिए । छात्रों द्वारा नेताजी पर कक्षा में भाषण लिया जा सकता है ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ का सस्वर वाचन करना चाहिए । पाठ का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को स्वातंत्र्य संग्राम से संबंधित ऐसी ही अन्य कहानियाँ पढ़ने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.आवाहन - आवहान,स्वयं - स्वयम,हाँ-हाँ,टँक - टँक,पलड़ा-पलड़ा, वृद्धा - वृध्दा,अमरीकी - अमेरीकी,घायल-घायळ आदि शब्दों का अध्यापकों ने छात्रों को मानक रूप समझाकर,लिखकर लेना चाहिए ,छात्रों को पाठ, पाठ में आक संबंध सूचक अन्यत्र छाँटकर कापि में लिखने के लिए कहना चाहिए ।

० पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम जागृत होता है और छात्र संबंध बोधक अव्ययों को समझाते है ।

पाठ क्रमांक - २४ (गद्य) । शीर्षक - सर्कस की गुड़ियों के करतब ।
युग - आधुनिक युग । विधा - निबंध ।

संरचना में स्थान- वर्णनात्मक निबंध ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - केरल के तेलीचेरी को सर्कसवालों का शहर कहा जाता है । इस शहर के छोटे लड़के और लड़कियों को सर्कस का अभ्यास सीखाया जाता है । और ये लड़के-लड़कियाँ,सर्कस में कसरत दिखाते हैं और दर्शकों का मन जीतते हैं । बाईस पच्चीस साल की उम्र तक ये कलाकार सर्कस में काम करते हैं ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को कसरत का महत्त्व बताना और साहस की भावना निर्माण करना । छात्रों को विस्मयादिबोधक अव्ययों को जानकारी देना ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - गुड़िया,सीढी,मोढा,चढना,छोड़ना,पढ़ना।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रश्नार्थक वाक्य,विस्मयादिबोधक वाक्य,प्रधान वाक्य, गौण वाक्य ।

कारक - आपादान कारक,संबंध कारक,अधिकरण कारक,संबोधन कारक,कर्ता कारक, कर्म कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,लोप चिह्न,आश्चर्य चिह्न,प्रश्न चिह्न, छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमानकाल,अपूर्ण वर्तमान काल,सामान्य भूतकाल,पूर्ण वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.टँगी,बाँस,चाबी,अजीब,केरल,प्राय: शहर,चालाकी,रोज-रोज, तालियाँ । और ह, ढ वर्ण से बने शब्द ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.केरल,जाल, ह और ढ वर्ण से बने शब्द ।

नये संबोध - कलाकार,जादू,साधना,माहिर,करतब,लचीला ।

नये शब्द - झूला,उछलना,डंडा,सीढी,लटकना,बाँस,चाबी,मोडकर,संतुलन,जाल, उत्साह,शाक,उम्र ।

मुहावरे - करतब दिखाना,लचीला होना,बच जाना,माहिर होना,उत्साह बढाना, परती होना,लौट जाना ।

० भाषिक उददेश्य - श्रवण - आकलन - उदा. ह और ढ वर्ण से बने शब्द, और टँगी,बाँस,अजीब,तालियाँ,रोज-रोज,शहर,चालाकी,प्राय: केरल ।

भाषण - संभाषण - उदा.टँगी,बाँस,चाबी,अजीब,केरल,प्राय: शहर,चालाकी, रोज-रोज,तालियाँ,और ह , ढ , वर्ण से बने शब्द । अध्यापकोंने नये शब्दों का मानक उच्चारण छात्रों को समझाकर उनकी ओर से करवाके लेना चाहिए ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए । छात्रों को सर्कस पर आधारित जानकारी पढने के लिए कहना चाहिए । पाठ का वाचन करते समय विस्मयादिबोध अन्यों पर ध्यान देकर वाचन करना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.केरल-केरळ, ह और ढ वर्ण से बने शब्द ।

अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर,लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को प्रस्तुत पाठ में आए विस्मयादि बोधक अव्ययों को चुनकर कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र कसरत का महत्त्व समझाते हैं और छात्रों में साहसी वृत्ति निर्माण होती है । छात्र विस्मयादिबोधक अव्ययों को समझाते हैं ।

पाठ क्रमांक २५ (गद्य) । शीर्षक - रामलीला ।
युग - भक्तिकाल । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - सांस्कृतिक कहानी ।
पाठ का संक्षिप्त आशय - उत्तर भारत में विजयादशमी के दिन रंगमंच पर रामलीला को पेश किया जाता है । राम के जीवन की सभी लीलाओं का मंच पर अभिनय किया जाता है । जिसमें भाई-भाई का,पिता-पुत्र का,पति-पत्नी का, स्वामी-सेवक का,संबध कैसा होना चाहिए यह बताया जाता है । अंत में रावण, मेघनाद,कुंभकर्ण के पुतले जलाए जाते हैं ।
पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि हमेशा सत्य की असत्य पर विजय होती है और मनुष्य ने सत्य के मार्गपर चलना चाहिए ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त व संधियुक्त शब्द - शुक्लपक्ष,नृत्योत्सव,रामलीला,एकादशी,रंगमंच,मेघनाद,सीताहरण,दशमुखधारी, अग्निबाण । द्विरुक्तिवाले शब्द - कोने-कोने,स्थान-स्थान,बीच-बीच, भाई-भाई,अलग - अलग ।
वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारण,अधिकरण कारक,करण कारक,कर्ता कारक,कर्म कारक, आपादन कारक,संप्रदान कारक ।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम,अल्प विराम,छोटा निर्देशक,अवतरण चिह्न ।

काल विचार - अपूर्ण वर्तमान काल,सामान्य भूतकाल,पूर्ण वर्तमान काल,सामान्य वर्तमान काल ।

० वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.संहार,महत्त्व,फड़कना,मृग,गोला ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.महत्त्व,सरल,पुतला,फड़कना,बुद्धि,गोला,अद्भुत,प्रतीक ।

नये संबोध - लीला,महोत्सव,प्रतिमा,प्रेरणा,समारोह ।

नये शब्द - आश्विन,जोश,सास,पुतला,कायर,लोभी,मुखौटा,सुमाऊ,गर्जना, घोषणा ।

मुहावरे - धूम - धाम से मनाना,प्रस्तुत करना,लाभ उठाना,सुध-बुध खोना,बुद्धि ठिकाने आना,प्रेरणा देना ।

० पौराणिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.संहार,महत्त्व,झाँकी,मृग,गोला ।

भाषण - संभाषण - उदा.संहार,महत्त्व,झाँकी,मृग,गोला,टोलियाँ । छात्रों को राम की एक घटना पर अभिनय करने के लिए कहा जा सकता है ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों को विजयादशमी त्योहार की जानकारी प्राप्त करने के लिए पौराणिक कहानियाँ पढ़ने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - उदा.महत्त्व-मेहत्व,सरल-सरळ,पुतला-पुतळा,बुद्धि - बुध्दी,गोला-गोळा, अद्भुत - अदभूत,प्रतीक-प्रतिक आदि । अध्यापकों ने छात्रों को नये शब्दों का मानक रूप समझाकर छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । छात्रों को राम के जीवन से संबंधित कहानियाँ कापि में लिखने के कहना चाहिए ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझते हैं कि हमेशा सत्य की असत्य पर विजय होती है और सत्य का अनुसरण करना चाहिए ।

पाठ क्रमांक - २६ (पद्य) । शीर्षक - हार नहीं होती ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कविता ।
संरचना में स्थान - उपदेशात्मक कविता ।
कविता का संक्षिप्त आशय - कवि ने चींटी, गोताखोर का उदाहरण देकर, यह संदेश दिया है कि आलस को त्यागकर जीवन में आयी चुनौती का सामना करना चाहिए । मनुष्य ने संघर्ष करते रहना चाहिए । तब ही उसकी प्रगति संभव है ।
कविता का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि मनुष्य ने प्रयत्न करने पर फल की प्राप्ति होती है ।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - चींटी, सिंधु, नहीं, निंद, संघर्ष ।

कारक - करण कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम, छोटा निर्देशक, पूर्ण विराम ।

काल विचार - भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्य काल ।

वर्तनी - मौखिक वर्तनी- छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं । उदा.लहरें, चलती, डुबकियाँ, जा-जाकर, चुनौती, चैन ।
लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.जा-जाकर, मुट्ठी, चढना, नहीं, गहरा ।
नये संबोध - हार, मेहनत, चुनौती, संघर्ष ।

नये शब्द - नौका, चींटी, फिसलना, सिंधु, गोताखोर, नींद, त्यागना, जा-जाकर, उत्साह, सफल, जयकार ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.गहरा,लहरें,चलती,डुबकियाँ, जा - जाकर,चुनौती ,चैन ।

भाषण संभाषण - उदा.गहरा,लहरें,चलना,डुबकियाँ,जा-जाकर,चुनौती,चैन ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत कविता का भावपूर्ण ढंग से वाचन करना चाहिए । छात्रों को कोशिश पर आधारित कहानियाँ एवं कविताएँ पढने के लिए कहना चाहिए और कविता कंठस्थ करने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत कविता में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता के कारण या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं । उदा.जा-जाकर ,ज्या-ज्याकर, मुट्ठी-मुठ्ठी,चढना-चढना,गहरा-गेहरा । अध्यापकों ने शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर कापि में लिखकर लेना चाहिए ।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि,प्रयत्न करने पर फल की प्राप्ति होती है ।

पाठ क्रमांक - २७ (गद्य) । शीर्षक - नरहरि सुनार ।
युग - भक्तिकाल । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - उपदेशपरक कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - नरहरि सुनार शिवभक्त था । वह न विठ्ठल के मंदिर में जाता है,न विठ्ठल का मुँह देखता है । एक साहुकार ने नरहरि को विठ्ठल के लिए करधनी बनाने के लिए कहा । करधनी कभी ढीली,कभी चुस्त होती थी । अंत में नरहरि विठ्ठल की कमर का नाप लेने के लिए जाता है । जब वह मूर्ति को टटोलता है तब उसे वह मूर्ति शंकर जी के पिंडी जैसी लगती है । नरहरि आँखो पर से पट्टी निकालता है । तो वह विठ्ठल की मूर्ति है । विठ्ठल नरहरि को कहते हैं कि देवताओं में भेद नहीं होता ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि सब का भगवान एक होता है। और छात्रों को समुच्चय बोधक अव्ययों की जानकारी देना।

० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - शिवभक्ति, शिवोवासना, सर्वशक्तिमान, रत्नजडित, करधनी।

वाक्य प्रकार - प्रश्नार्थक वाक्य, सरल वाक्य, प्रधान वाक्य, गौण वाक्य, विस्मयादि बोधक वाक्य।

कारक - संबंध कारक, अधिकरण कारक, संप्रदान कारक, कर्ता कारक, कर्म कारक, करण - कारक।

विराम चिह्न - पूर्ण विराम, बहा निर्देशक, अल्प विराम, प्रश्न चिह्न, अवतरण चिह्न, लोपचिह्न।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल, सामान्य भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, पूर्ण वर्तमान काल, अपूर्ण भूतकाल।

वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से करते हैं। उदा. सुनार, जँचता, गहना, उक्, साहुकार, साँवली,

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं। उदा. सुनार, कट्टर, विठ्ठल, गहना, पट्टी, कलश, साहुकार।

नये संबोध - महान, आवभगत, साँवली।

नये शब्द - कट्टर, साहुकार, कमर, करधनी, नाप, मूर्ति, कलश, गहना, मुहरें, ढोली, चुस्त, पट्टी, पिंडी।

मुहावरे - आवभगत करना, स्वीकार करना, चेहरा जर्द पडना, अनहोनी होना, अचरज होना, क्षमा माँगना।

० मौखिक उद्देश्य - श्रवण आकलन - उदा. सुनार, उफ, साहुकार, चुस्त, गहना, जँचता, साँवली।

भाषण - संभाषण - उदा.गहना,साँवलो,उफ,साहुकार,चुस्त ।

वाचन - अध्यापकों ने प्रस्तुत पाठ सस्वर वाचन करना चाहिए । छात्रों को नरहरि सुनार एवं अन्य संतो की जानकारी लेने के लिए संतो के जीवन पर आधारित कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों को लिखते समय शीघ्रता या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते है उन में सुधार आवश्यक है । उदा.सुनार-सोनार, कट्टर - कट्टर ,गहना- गेहना,साहुकार-सावकार,पट्टी-पट्टी ,विठ्ठल - विठल, कलश-कळस । छात्रों को पाठ का परिच्छेद देकर,समुच्यय बोधक अव्यय चुनकर लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

o पाठ्यक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि सब का भगवान एक होता है और छात्रों को समुच्चय बोधक अव्ययों जानकारी मिलती है ।

पाठ क्रमांक - २८ (गद्य) । शीर्षक - विजयिनी गिरिबालाएँ ।
युग - आधुनिक युग । विधा - कहानी ।
संरचना में स्थान - सहासी कहानी ।

पाठ का संक्षिप्त आशय - हिमालय की चोटी पर चढने के लिए लडके और लडकियों का एक दल गया है । अंत में संकटों का मुकाबला करते अथक परिश्रम के बाद ये बालाएँ 'मात्री' शीखर पर पहुँचती है जो ७००० मीटर ऊँचाई पर है और बालाओंके मन में गौरव का भाव निर्माण होता है ।

पाठ का उद्देश्य - छात्रों को समझाना कि परिश्रम करने वालों की हार नहीं होती और संज्ञाओं की जानकारी देना ।

o व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - संधियुक्त व समासयुक्त शब्द - गंगा-- मैया,सर्वप्रथम,हिमालय,हिमप्रपात ।

वाक्य प्रकार - सरल वाक्य,प्रधान वाक्य,गौण वाक्य ।

कारक - संबंध कारक,करण कारक,अधिकरण कारक,कर्ता कारक,कर्मकारक,
आपादन कारक ।

विराम चिह्न - अल्प विराम,पूर्ण विराम,स्वल्प अवतरण,अवतरण चिह्न,बडा निर्देशक,छोटा निर्देशक ।

काल विचार - सामान्य वर्तमान काल,सामान्य भूतकाल,पूर्णभूत काल,अपूर्ण भूतकाल,
अपूर्ण वर्तमान काल,पूर्ण वर्तमान काल ।

o वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्दों का उच्चारण करते समय गलतियाँ करते हैं । उदा.चोटी,टुकडा,पडाव,दृढ,साँस,फँसना,
आक्सीजन,पाँव,गाडना,टोली ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.उद्देश्य,पाँव,पडाव,द्वितीय,टोली,आक्सीजन,तापमान ।

नये संबोध - विजय,उद्देश्य,आरोहण,पवित्र,गौरव,आशीर्वचन ।

नये शब्द - चोटी,पडाव,कुली,आक्सीजन,पीठ,आईस बाक्स,जुराब,फूट कवर,
कैम्पौस,गोद,मनोबल,याद ।

मुहावरें - तय करना,प्रबंध करना,निश्चय करना,चल पडना,आगे बढना,मदद करना,
मन भर उठना ।

o भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.चोटी,पाँव,टुकडी,पडाव,पाँव,
गाडना,साँस,टोली,फँसना ।

भाषण संभाषण - उदा.चोटी,पाँव,टुकडी,गाडवा,टोली,फँसना,साँस ।

वाचन - अध्यापकों ने छात्रों को पाठ का सस्वर वाचन करने के लिए कहना चाहिए ।
अध्यापकों ने छात्रों को ऐसी ही साहसपरख यात्रा वर्णन या कहानियाँ पढने के लिए कहना चाहिए ।

लेखन - छात्र प्रस्तुत पाठ में आए नये शब्द लिखते समय या मराठी के प्रभाव के कारण गलतियाँ करते हैं। उदा.उद्देश्य - उद्देश,गाड़ना -गाडना,टोली-टोळी, द्वितीय - द्वीतीय,तापमान-तपमान,आक्सीजन - ऑक्सिजन। अध्यापकों ने छात्रों को शब्दों का सही रूप समझाकर उनकी ओर से लिखकर लेना चाहिए। छात्रों को पहाडी मंदिर के सैर का वर्णन दस पंक्तियों में बही में लिखने के लिए कहा जा सकता है।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्र समझाते हैं कि मेहनत करणे वालों की हार नहीं होती और छात्रों को संज्ञाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

पाठ क्रमांक - २९ (पद्य) ; शीर्षक - बापू।
युग आधुनिक युग । विधा - कविता।
संरचना में स्थान - देशभक्ति परक कविता।
कविता का संक्षिप्त आशय - बापू ने हमे देश-प्रेम का मंत्र सुनाया है। आपू ने सत्य,अहिंसा,तत्व लोगों के सामने रखे। उन्हों ने क्रोध को प्रेम से,दुर्गुण को गुण से जीता है। बापू ने असंभव को संभव किया। राष्ट्रपिता बापू ने बाधाओं का सामना किया और भारत को गुलामी से मुक्त किया। बापू कोटि-कोटि भारतीय जनता के नेता है।
कविता का उद्देश्य - छात्रों के मन में देशभक्ति एवं बापूजी के प्रति आदर निर्माण करना।
० व्याकरण - वर्ण विचार की दृष्टि से - समासयुक्त व संधियुक्त शब्द - असंभव, दुर्गुण,राष्ट्रपिता।
कारक - संबंध कारक,कर्ता कारक,कर्म कारक,करण कारक।
विराम चिह्न - अल्प विराम,छोटा निर्देशक,पूर्ण विराम।
काल विचार - वर्तमान काल।
वर्तनी - मौखिक वर्तनी - छात्र कविता में आए नये शब्दों का उच्चारण गलत रूप से

करते है । उदा.जगाया,अहिंसा,सँवारना,आज ।

लिखित वर्तनी - छात्र मौखिक भाषा की तरह लिखित भाषा में भी गलतियाँ करते हैं । उदा.दूर,दुनिया,बल ।

नये संबोध - उबारना,राष्ट्रपिता,उपमा,मंत्र,मुकुट ।

नये शब्द - गुलामी,विधाता,दुर्गुण,मुक्ति,शीश ।

० भाषिक उद्देश्य - श्रवण - आकलन - उदा.जगाया,अहिंसा,सँवारना,आज ।

भाषण - संभाषण - उदा.जगाया,आज,सँवारना,अहिंसा ।

अध्यापकका भाषण संभाषण प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण होना चाहिए । छात्रों को गांधीजी के कार्यपर भाषण करने के लिए कहा जा सकता है ।

वाचन - छात्रों को कविता का आशय समझाने के लिए मौन वाचन करने के लिए कहना चाहिए । वाचन के समय शब्दों की मात्रा और विराम चिह्नोंपर ध्यान देना चाहिए । छात्रों को बापूजी का जीवन चरित्र पढने को कहना चाहिए ।

लेखन - अध्यापकों ने कविता में आए नये शब्दों का उदा.दूर-दुर,दुनिया-दुनया, बल-बळ शब्दों का मानक रूप छात्रों को समझाकर छात्रों की ओर से लिखकर लेना चाहिए । गाँधी का कार्य विषय पर छात्रों को दस पंक्तियाँ कापि में लिखने के लिए कहा जा सकता है ।

० पाठयक्रम के उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान - छात्रों के मन में देश-भक्ति एवं बापूजी के प्रति आदर निर्माण होता है ।

संदर्भ सूचि

१) डॉ. शर्मा लक्ष्मीनारायण
`भाषा १,२ की शिक्षण-विधियाँ
और पाठ-नियोजन`
प्रकाशक - विनोद पुस्तक मंदिर
रांगेय राघव मार्ग, आगरा-२
पृ.क्र. १५३ ।

२) -- तदैव -
पृ.क्र. १७६ ।

३) -- तदैव --
पृ.क्र. २१९ ।

४) -- तदैव --
पृ.क्र. २४१ ।